ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष-18 अंक- 20 जनवरी-II (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.00

जन सेवा में समर्पित पानीपत का नवनिर्मित ज्ञानमानसरोवर

सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी। साथ हैं ब्र.कु. अमीरचंद, ब्र.कु. हंसा, राज्यमंत्री कर्ण देव कम्बोज, ब्र.कु. भारत भूषण तथा पीछे समर्पित बहनें दिखाई दे रही हैं। सभा में शहर के प्रबुद्ध जन।

पानीपत-हरियाणा। ज्ञान मानसरोवर के उद्घाटन एवं ब्रह्माकुमारी बहनों के दिव्य समर्पण समारोह के अवसर पर 'परमात्म श्रीमत पर स्वस्थ एवं सुखी जीवन' विषयक भव्य कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि संस्था के प्रारम्भ में सन् 1937 में पिता श्री ब्रह्मा और हम लगभग 300 मुट्ठी भर भाई-बहनें थे। उनकी सच्ची लगन और तपस्या ने भारत तो क्या समस्त विश्व के 140 देशों में नैतिक मूल्यों की स्थापना की है। पिता श्री ब्रह्मा ने नारी शक्ति को आगे बढ़ाया। उन्होंने बताया कि ब्रह्माकुमारी संस्था के जितने भी मुख्य सेवाकेन्द्र हैं सबकी संचालिका हमारी बहनें हैं। दादी जी ने विश्व शांति का संदेश देते हुए कहा कि यदि विश्व में शांति स्थापित करना चाहते हैं तो हमें पवित्रता को अपनाना अति अनिवार्य है। जीवन से सारी बुराइयों का त्याग कर यदि राजयोग का अभ्यास प्रतिदिन करेंगे तो घर, समाज तो क्या सारे विश्व में शांति आ जायेगी। इस अवसर पर मुख्य अतिथि कर्ण देव कम्बोज, खाद्य राज्यमंत्री ने संस्था के सामाजिक तथा आध्यात्मिक कार्यों की बहुत-बहुत प्रशंसा की।

अलौकिक दिव्य समर्पण समारोह

इस अवसर पर ग्यारह बहनों ने स्वयं को आजीवन दादी जानकी की उपस्थिति में ईश्वरीय सेवार्थ समर्पित किया। इन पवित्र बहनों के माता-पिता व सम्बन्धी इस भव्य समर्पण समारोह के साक्षी बने। सभी बहनों ने परमात्मा के विश्व परिवर्तन के महान कार्य में खुद को समर्पित करने की दृढ़ प्रतिज्ञा ली।

ज्ञान-मानसरोवर जो कि 5 एकड़ भूमि में निर्मित है। जिसके तीसरे फेज़ 'दादी चन्द्रमणि युनिवर्सल पीस ऑडिटोरियम' का उद्घाटन दादी जानकी के कमल हस्तों द्वारा हुआ। यहाँ समय प्रति समय समाज के सभी वर्गों की उन्नति के लिए आध्यात्मिक कार्यक्रम चलते रहते हैं।

उद्घाटन समारोह में कृष्ण लाल पंवार, ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर ने कहा कि ऐसा भव्य सभागार का होना हरियाणा के लिए गौरव की बात है। इस अवसर पर राजयोगी ब्र.कु. अमीर चन्द, डायरेक्टर, पंजाब ज़ोन, राजयोगी ब्र.कु. करूणा, चीफ ऑफ मल्टी मीडिया, एवं राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंघल ने विचार व्यक्त किये। साथ ही ब्र.कु. भारत भूषण ने सबका अभिनंदन किया। ब्र.कु. सरला दीदी ने सबका धन्यवाद किया। इस अवसर पर भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन हुआ।

समाज को दुराचार व दुर्व्यवहार से बचाएं : ब्र.कु. उषा दीदी

'जीवन का आधार, गीता का सार' विषयक कार्यक्रम में शरीक हुए शहर के प्रबुद्धजन

रायपुर-छ.ग.। आज समाज में हर मोड़ पर दुर्योधन, दु:शासन और शकुनी जैसे पात्रों का सामना करना पड़ रहा है। गीता में वर्णित हर पात्र आज भी प्रासंगिक है। हमारे आंतरिक अच्छे गुण ही वास्तव में पाण्डवों के प्रतीक हैं, इन गुणों का अवगुणों अर्थात् कौरवों से प्रतिपल सामना होता है। पाण्डव अर्थात् भगवान से प्रीत बुद्धि। यह विचार अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त स्वप्रबंधन विशेषज्ञा राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी ने ब्रह्माकुमारीज़ के शान्ति सरोवर में आयोजित 'जीवन का आधार, गीता का सार' विषयक गीता ज्ञान रहस्य प्रवचन माला में व्यक्त किये। दीदी ने बताया कि कुछ लोग चुनौतियों का सामना करके जीवन को सफल कर लेते हैं। जो लोग चुनौती के वक्त सही निर्णय ले पाते हैं, उनके लिए सफलता के द्वार खुल जाते हैं। जो लोग दुविधाओं में घिरे होते हैं, वह असफल हो जाते हैं। ऐसे तनाव, हताशा और निराशा से बाहर निकालने में गीता बहुत मददगार सिद्ध हो सकती है। उन्होंने कहा कि कौरव अर्थात् अधर्म के वाचक। धृतराष्ट्र अर्थात् जो राजसत्ता को बाहुबल से प्राप्त करते हैं। गांधारी अर्थात् विवेक रूपी आँखों पर सदा अज्ञानता की पट्टी बांधे हुए। कौरवों के नाम 'दु' अक्षरों से शुरू होते हैं। दुर्योधन अर्थात् धन का दुरूपयोग करने वाला। कुरूक्षेत्र अर्थात् कर्मक्षेत्र। यह संसार ही कर्मक्षेत्र है।

कार्यक्रम के दौरान अपने विचार व्यक्त करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी। सभा में ध्यान पूर्वक सुनते हुए शहर के गणमान्य लोग।

सभी समस्याओं का समाधान गीता में निहित है। उन्होंने कहा कि गीता में कर्त्तव्य से विमुख होने की बात नहीं की गई है। गीता में जो योग सिखलाया गया है, वह जीवन में संतुलन रखने के लिए है। योग से हमारे कर्म और व्यवहार में कुशलता आती है। आज जो हमारे जीवन में असंतुलन आ गया है, उसका प्रमुख कारण योग से दूर होना है। उन्होंने कहा कि परिवार से लेकर विश्व की सभी समस्याओं का समाधान गीता में समाया है। इसीलिए गीता को सभी शास्त्रों में श्रेष्ठ माना गया है।

गीता सम्पूर्ण मानवता का शास्त्र : उषा दीदी ने कहा कि गीता भगवान का गाया हुआ गीत है। चूंकि परमात्मा सभी आत्माओं का पिता है इसलिए यह सम्पूर्ण मानवता का शास्त्र है। श्रीमद्भगवद् गीता मनुष्यों में अच्छे संस्कारों का सृजन करती है। गीता में ऐसा अमृत समाया हुआ है कि वह हरेक व्यक्ति को अमरत्व की ओर ले जाता है। गीता के सार को जिसने भी जीवन में धारण किया है, वह अमर हो गए हैं।

इससे पूर्व गृह सचिव अरूण देव गौतम, महापौर प्रमोद दुबे, विधानसभा सचिव चन्द्रशेखर गंगराड़े, पत्रकारिता वि.वि. के कुलपति डॉ. मानसिंह परमार, उद्योगपति राजीव अग्रवाल और क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

सत्य... सत्य ही रहता है...!!!

समाज किसी को भी तुरंत अपनाने को राज़ी नहीं होता। हमेशा भावनात्मक बहाव में या अपनी शक्ति की कमी के कारण या धर्म के बहाव में बिना कुछ सोचे समझे विरोध करना, ये हमारी नियति है। और इसी नियति की वजह से हम दु:खी हैं। अगर ये दुनिया में कहा गया है कि परमात्मा ने अपने जैसा इंसान बनाया, तो कुछ तो इसमें सच्चाई होगी। वैसे इंसान दिखने भी तो चाहिए। वैसे दिखाई नहीं दे रहे हैं। कारण, रहे नहीं। क्योंकि जब ऐसे इंसान होंगे, तो हमारे जैसे नहीं होंगे। इसलिए सत्य तो सत्य है। उसमें कुछ भी मिलावट नहीं हो सकती। सबको पता है, पत्थर में भगवान नहीं होते। सबको पता है भगवान इधर-उधर नहीं हो सकते। फिर भी कोई भी इस चक्रव्यूह से बाहर निकले तब तो समझे ना।

- ब्र.कु. गंगाधर

मूर्ति पूजक बहुत हुए इस संसार में, और उनकी भक्ति भी बहुत प्रगाढ़ थी। लेकिन वे सबके लिए हर जगह प्रसिद्ध नहीं हुए। कारण, सही रूप से उन्होंने भगवान का सिमरण नहीं किया। कोई आंचलिक स्तर पर, कोई प्रादेशिक स्तर पर, तो कोई राष्ट्रीय स्तर पर ज़रूर प्रसिद्ध हुए होंगे, लेकिन उनका उदाहरण भक्ति हेतु थोड़ा बहुत दिया जाता है, उन्हें पढ़ाया नहीं जाता। पढ़ा या पढ़ाया उनको जाता है, जो हमेशा सत्य होता है, सत्यता की बात करता है, सत्यता के साथ रहता है और सत्य को जीता है। अर्थात् सत्य शुरू में ज़रूर स्वीकार्य नहीं होता लोगों को, लेकिन बाद में उनके गुण सभी को बहुत आकर्षित करते हैं। इसीलिए जितने भी वास्तविक संत-महात्मायें हुए, उन्हीं को आज पाठ्यक्रमों में शामिल कर पढ़ाया जाता है, औरों को नहीं। सत्य को पहचानना पहली वरियता, उसपर अमल करना दूसरी, और यही इन संतों ने किया। आज भी कुछ जागृत लोग हैं, जो इन आडम्बरों का विरोध करते तो हैं, लेकिन अपने निजी स्वार्थ के लिए।

सत्य क्या है? सत्य की परिभाषा क्या है? सत्य जो सर्व स्वीकार्य हो, मान्य हो वो होता है ना। तो आप अपने से शुरुआत करके देखें कि क्या आप, सभी को मान्य हैं, स्वीकार्य हैं? हमारे हिसाब से तो नहीं। क्योंकि सभी को आपसे कुछ न कुछ शिकायत ज़रूर है। इसका मतलब कुछ झूठ है जो हमारे साथ जुड़ा हुआ है। तभी तो लोग हमसे असंतुष्ट हैं। सबलोग सत्य सुनना चाहते हैं, सत्य के साथ रहना चाहते हैं, सत्य बोलने के लिए कहते हैं, लेकिन आसपास का माहौल देखते हुए उसमें ढ़लने के कारण उसको स्वीकार करते हुए कह देते हैं कि आज तो झूठ का ही बोलबाला है, सच्चे का मुँह काला है। इसका मतलब आज जो सच बोले वो इस दुनिया से कहीं और डोले। लोग उसे अपनी बिरादरी का नहीं मानते। कहते हैं ये तो इस दुनिया में रहने लायक नहीं है, ये तो राजा हरीशचन्द्र है। इसका मतलब आज भी राजा हरीशचन्द्र सत्य का एक मिसाल है, जो सबके लिए एक उदाहरण है। इसलिए सच क्या है? क्यों सबको इतना आकर्षित करता है? आप भी सोचो, हम भी सोचेंगे।

उपरोक्त बातों से आपको ये नहीं लगता कि जिन्होंने अपने ऊपर काम किया, सत्य को जाना, उस परम सत्य को पहचाना, अपने दिल की सुनी, समाज, मान्यता, आडम्बर का पुरजोर विरोध किया, लोगों ने उन्हीं को स्वीकार किया, चाहे वो किसी भी धर्म, जाति का हो। आप हमारे सामने बैठकर परम सत्य के बारे में बहस को लेकर विरोध ज़रूर कर सकते हैं, लेकिन आप इन सब आत्माओं को स्वीकार तो करते हैं ना। ये है सत्य और उससी जुड़ी हुई एक अद्भुत, अकल्पनीय मान्यता, जिसे सब स्वीकार करेंगे ही करेंगे। और यही परमात्मा चाहता है कि बहुत कम लोग मुझे और तुझे समझ पायेंगे। क्योंकि सत्य की राह पर चलना बहुत आसान होता है, क्योंकि इस राह पर भीड़ कम होती है। आज हम भीड़ में भेड़ चाल चल रहे हैं, क्योंकि हम डर रहे हैं। अरे भाई! कुछ अलग दिखना चाहते हो और देखना चाहते हो, तो कुछ हटकर, सत्य को पहचानकर उसे अपनाना पड़ेगा।

शुभ भावना का गुप्त दान कर महापुण्य जमा करो

अभी चारो तरफ शिवरात्रि मना रहे हैं। हर मुरली में बाबा बताता है शिवजयंती सो गीता जयंती इसलिए शिवरात्रि कहते हैं, जयंती नहीं कहते हैं क्योंकि कलियुगी अन्धियारी रात है तो शिव बाबा ब्रह्मा के तन में प्रवेश हो ज्ञान अंजन देकर अज्ञान अन्धेर विनाश कर देते हैं। किसी को कहो तुम अज्ञानी हो तो उसे दु:ख लगेगा, पर महसूस करते हैं। कहते हैं अज्ञान अन्धेरे में भटक रहे थे, जहाँ तहाँ चारो तरफ लगाये फेरे परन्तु उनसे दूर रहे। कैसा मीठा बाबा भटकने से छुड़ाता है, किसके बच्चे हो? बहुत अच्छा लगता है, वो एक ही बाप जब ब्रह्मा तन में प्रवेश हुआ तो मेरी माँ भी है तो शिव बाप भी है। जब मुख से सुना रहा है तो शिक्षक है, सतगुरू है, श्रीमत पर चलने के लिए कितना सही रास्ता बताया है। मनमत परमत पर भटकने से छुड़ाया है, ऐसा बाप फिर मेरा सखा है। कभी भी शिक्षक को कोई सखा नहीं बना सकते हैं या सतगुरू को सखा नहीं बनाते हैं, पर हमारा बाबा इतना मीठा प्यारा है, सखा बन करके साथ दिया है, अपने जैसा दु:खहर्ता, सुख-शान्ति दाता बनाता है। बाबा का बनने से पहले क्या मिला है? शान्ति मिली है, शक्ति मिली है या खुशी मिली है? अगर कहेंगे शान्ति मिली है, शान्ति भी तब आई, जब खुशी हुई है। कमज़ोर थी तो कहेंगे शक्ति मिली। ऐसी चिटचैट करने में मज़ा आता है। पहले तो बाबा कितना प्यार करता है, इसलिए कहेंगे पहले प्यार मिला। ऐसा मेरा बाबा है, जो माँ के रूप से मेरा बच्चा कहके गोद में बिठाता है फिर गले लगाता है। अनुभव है ना! फिर हम बच्चों को ऐसी गले की माला बनाता है, जिसका भक्त सिमरण कर रहे हैं। ऐसा भगवान भाग्य विधाता, जिसने गोद बिठाके गले लगाया है फिर नज़र से निहाल करके नज़रों में बिठा लिया है, तो राह भी दिखा दिया, साथ भी ले चल रहा है। बाबा मिला तो बाबा से बहुत खज़ाना मिला। बाबा कहता है अपने खज़ाने को देखो, ज्ञान का खज़ाना, गुणों का खज़ाना, शक्ति का खज़ाना मिला है। तो अभी मन्सा से शक्ति का खज़ाना दो, वाचा से ज्ञान का खज़ाना दो और कर्मणा से गुणों का खज़ाना दो। अब दाता बन करके समय पर किसी को अन्दर में शुभ भावना का गुप्त दान करके महापुण्य जमा करो। बाबा ने दाता बन करके दिया है तो औरों को दो और दाता बन जाओ। बाबा से कभी कुछ मांगना नहीं पड़ता है, मांगने से मरना भला, जीते जी ऐसे मरे हैं तो बाबा अपने आप देता है। मुरली से ऐसा खज़ाना मिलता है जो सारा दिन मनन चिंतन सिमरण करते कलह-क्लेष मिट जाते हैं।

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

बाबा के साथ का फायदा ले मायाजीत बनो

कभी भी कोई भी प्रकार की माया स्वप्न में भी न आवे। सारे दिन की दिनचर्या और संकल्पों के आधार पर स्वप्न आते हैं। भले नींद में परवश हो जाते हैं लेकिन प्रभाव उसका ही होता है। इसीलिए अभी अगर किसी भी प्रकार का कोई संकल्प आवे तो फौरन मधुबन में मन के विमान से पहुँच जाना। इसका पेट्रोल है ज्ञान-योग। स्टार्ट करने का बटन है 'मेरा बाबा'। पंख है - उमंग और उत्साह, तो सबके पास ऐसा विमान है? तो जब भी कुछ होवे तो आप इस विमान में बैठके मधुबन में पहुँच जाना। मधुबन की चार दीवारों के अन्दर आ जायेंगे तो फिर वही नशा याद आयेगा जो अनुभव किया है क्योंकि मधुबन में साकार में रहे हैं, देखा है तो जल्दी याद आ जायेगा, इसलिए मधुबन में आ जाना।

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

ऐसे टाइम पर भले और बातें भूल सकती हैं, लेकिन स्टोरी बहुत जल्दी याद आती है, वो नहीं भूलती है। तो अपने जीवन की कहानी को याद करो। बाबा के पास आये तो पहला-पहला नशा क्या था? वो याद करो। माया को भी अपना गुरू बनाके उससे भी गुण सीखो कि वो कभी अपना काम नहीं भूलती है। जब वो अपना काम नहीं भूलती तो हम क्यों अपना काम भूलते हैं? माया का काम है आना, हमारा काम है विजय प्राप्त करना। सर्वशक्तिवान वो या हम? तो हम क्यों कमज़ोर होते हैं? इसलिए हमको माया से डरना नहीं है। हम अभूल हो करके, मायाजीत हो करके चलते चलें। माया भी बड़ी चतुर है, वो पहले अकेला करके फिर अटैक करती है, तो अकेले होते ही क्यों हैं? बाबा हमारे साथ है, यह स्मृति ज़रूर हो। खुद भगवान ने ऑफर किया है, मैं तुम्हारे साथ भी हूँ, साथी भी हूँ, सारथी भी हूँ। तो क्यों नहीं हम फायदा उठायें? ट्रस्टी होके रहो तो फायदा होवे। प्रवृत्ति में रहो लेकिन पर वृत्ति में रहो, यह भूल जाते हैं तो गृहस्थी बन जाते हैं। इसलिए जो बाबा के डायरेक्शन्स मिलते हैं उस पर चलते चलो फिर माया से घबरायेंगे नहीं। कोई-न-कोई शक्ति की कमज़ोरी आती है तो माया आती है। हम ही माया को आह्वान करते हैं। कमज़ोरी आना माना माया का आह्वान करना। तो क्या बनना है? नम्बरवन। कभी हिम्मत नहीं हारना तो बाबा की मदद सौ गुणा मिलती रहेगी। मानो कभी माया का वार हो जाता है तो दिलशिकस्त भी कभी नहीं होना। बाबा साथ है, इस स्मृति से हिम्मत लाना क्योंकि दिलशिकस्त हुए तो गये। हमारा भाग्य नहीं है, हमें इतना साल हो गया है, मेरे में परिवर्तन आया नहीं... यह संकल्प माया देती है अपना बनाने के लिए। 'बाबा मेरा है' तो मेरे ऊपर तो अधिकार है, उस समय बाबा के पीछे ही पड़ जाओ कि बाबा आपको मदद देनी ही है क्योंकि मेरा बाबा है। तो बाबा पर अपनेपन का अधिकार रखो तो नशा चढ़ेगा। रुहानी नशा रखो। मैं आत्मा, मेरा बाबा। फिर माया के आने का दरवाज़ा ही बन्द। आयेगी ही नहीं। तो नम्बरवन बनना ही है यह पक्का। तो बाबा को याद करेंगे तो नशा चढ़ेगा।

ज्ञानी तू आत्मा का मुख्य गुण 'सहनशीलता'

बाबा हम बच्चों को यह बहुत बड़ा लेसन देते कि हे बच्चे इस ज्ञान की मंज़िल पर चलेंगे तो सहन करने की शक्ति धारण करनी पड़ेगी। सहनशील बनने की थोड़ी तकलीफ लेनी पड़ेगी। यह सहनशीलता का गुण बहुत बड़ी शक्ति है, यह सर्व गुणों में महान गुण है। यह बाबा का बोल सुन सब प्रैक्टिकल चार्ट देखें कि मेरे में सहनशीलता का गुण वा शक्ति है?

बाबा ने कहा बच्चे दु:ख-सुख, स्तुति-निंदा, मान-अपमान सबमें समान रहने की, एकरस स्थिति में रहने की, सहनशील होने की शक्ति चाहिए। तो यह शक्ति चाहिए या मुझ आत्मा का अथवा इस ज्ञान का पहला-पहला गुण ही यह है? ज्ञानी तू आत्मा का गुण है - समान रहना। अगर ज्ञानी तू आत्मा में यह गुण नहीं तो वह प्रिय नहीं। जब हम अपने को ज्ञानी तू आत्मा कहते, तो माना हमारे अन्दर ड्रामा की सारी नॉलेज है। हर आत्मा के सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो की स्टेजेस की भी नॉलेज है। जब नॉलेज है तो नॉलेज की शक्ति के आधार पर समान रहने की शक्ति स्वत: ही आ जाती है।

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

जैसे बाल से युवा, युवा से वृद्ध होते तो कभी यह नहीं कहते कि ओ नेचर! तूने बाल से युवा वा युवा से बूढ़ा क्यों बनाया? परन्तु जानते हैं यह प्रकृति का नियम है। चार ऋतुएं होना यह भी प्रकृति का नियम है। जब हम जानते हैं कि यह नियम है, तो हम क्यों कहें, ओ प्रकृति तुम हमें ठण्डी में वा गर्मी में दु:ख क्यों देती! हम जानते हैं यह नेचर का गुण है। सर्दी के समय सर्दी, गर्मी के समय गर्मी होनी ही है। हमारे पास उससे बचने के साधन हैं तो उसे यूज़ करें। हम जान गये, अभी की प्रकृति है ही तमोप्रधान। सतयुग में प्रकृति सतोप्रधान है इसलिए सुखदाई है। अभी तमोप्रधान है इसलिए प्रकृति पर कभी गुस्सा नहीं आता। कभी भी हम ऐसे नहीं लड़ते – ए सर्दी तू मुझे दु:ख क्यों देती? किससे लड़ेंगे? जब बुद्धि में आता यह तो प्रकृति का धर्म है तो उससे लड़ने नहीं जाते। फिर जब कहते क्या करें यह पारिवारिक परिस्थितियां आती हैं। वह तो आयेंगी ही। मैं उससे दु:खी क्यों हूँ! जैसे प्रकृति का दु:ख सुख सहन करते, वैसे यह परिवार का भी तो हिसाब-किताब है। मैं उसमें क्यों लड़ूँ! हमें उसमें अपनी स्थिति अप-डाउन नहीं करनी है।

कभी-कभी सोचते मुझे तो सबसे मान मिलना चाहिए। ये मुझे मान नहीं देता इसलिए गुस्सा आता। लेकिन जब प्रकृति दु:ख देती तो गुस्सा नहीं आता। जब मेरा कोई अपमान करता तो मैं रंज होती लेकिन मैं सोचूं कि मैंने उसे कितना मान दिया है? एक है देना, एक है लेना। जब अपमान पर गुस्सा आता माना मैं मान की भूखी, प्यासी हूँ। मान की मांग है। मैं दाता बनूं या लेवता बनूं? मुझे मान देना है या लेना है? मैं वरदाता हूँ या आत्माओं से वर लेने वाली हूँ? मान मांगना अर्थात् आत्माओं से वर मांगना। बाबा कहता मांगने से मरना भला... मैं दाता की बच्ची दाता हूँ तो लेवता क्यों बनते! यह सवाल हरेक अपने से पूछे।

स्वास्थ्य : घुटने ... मत बदलिये

मनुष्य जीवन में उसकी आयु के 50 साल के बाद धीरे-धीरे शरीर के जोड़ों में से लुब्रीकेन्ट्स एवं कैल्शियम बनना कम हो जाता है। जिसके कारण जोड़ों का दर्द, गैप, कैल्शियम की कमी आदि समस्याएँ सामने आती हैं, जिसके चलते आधुनिक चिकित्सा आपको ज्वॉइन्ट रिप्लेस करने की सलाह देती है, तो कई आर्थिक रूप से सम्पन्न लोग यह मानते हैं कि हमारे पास तो बहुत पैसे हैं तो घुटने चेंज करवा लेते हैं। किंतु क्या आपको पता है कि जो चीज़ कुदरत ने हमें दी है, वो आधुनिक विज्ञान या कोई भी साइंस नहीं बना सकती।

★ अप्राकृतिक ज्वॉइन्ट फिट करवा कर थोड़े समय 2-4 साल तक ठीक हो सकते हैं, लेकिन बाद में आपको बहुत ही तकलीफ होगी।

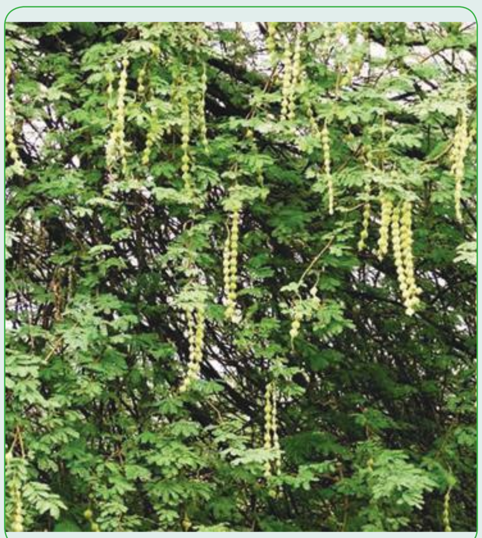

★ ज्वॉइन्ट रिप्लेसमेंट का सटीक इलाज आज हम आपको बता रहे हैं, जिसे आप ऐसे हज़ारों ज़रूरतमंद लोगों तक पहुँचाएं जो रिप्लेसमेंट के लाखों रुपये खर्च करने में असमर्थ हैं।

★ 'बबूल' नाम के वृक्ष को आपने ज़रूर देखा होगा। यह भारत में हर जगह बिना लगाए ही अपने आप खड़ा हो जाता है।

★ अगर यह बबूल नाम का वृक्ष अमेरिका या तो विदेशों मे इतनी मात्रा में होता, तो आज वही लोग इनकी दवाई बनाकर हमसे हज़ारों रुपये लूटते। लेकिन भारत के लोगों को जो चीज़ मुफ्त में मिलती है, उनकी उन्हें कोई कदर नहीं है।

प्रयोग इस प्रकार करें:-

★ बबूल के पेड़ पर जो फली (फल) आती है, उसको तोड़कर लायें। आपको शहर में नहीं मिल रहे तो किसी गांव जाएं, वहाँ जितने चाहिये उतने मिल जायेंगे, उसको सुखाकर पाउडर बना लें।

★ सुबह 1 चम्मच पाउडर गुनगुने पानी के साथ लें। इसे खाली पेट लें और इसे लेने के एक घण्टे बाद ही किसी अन्य पदार्थ का सेवन करें।

★ सही रूप से केवल 2-3 महीने सेवन करने से आपके घुटने का दर्द बिल्कुल ठीक हो जायेगा। आपको घुटने बदलने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

(डॉ.राहुल जैन) नेचरोपैथी एवं एक्यूप्रेसर, जयपुर, 09460555101

हमें सौ प्रतिशत सत्य कौन बतायेगा?

प्रश्न: हम परमात्मा को तलाशेंगे कैसे? कौन हमें उनसे मिलवायेगा?

उत्तर: अगर हम आपके परिवार के उन सदस्यों को यहाँ बुलाते हैं, जो आपको बहुत अच्छी तरह से जानते हैं और उनको कहें कि आपका परिचय दें। वे सब एक ही व्यक्ति के बारे में बतायेंगे, लेकिन एक जैसा नहीं बतायेंगे। जो सबसे ज़्यादा करीब हैं, जो आपको बहुत ही अच्छी तरह से जानते हैं वे भी आपका परिचय एक तरह से नहीं देंगे। उनका अपने रिश्ते के अनुसार परिचय बदलता जायेगा। वे सभी आपके बारे में एक जैसा नहीं सुनायेंगे लेकिन उनमें से कोई भी गलत नहीं होगा। लेकिन क्योंकि फर्क आ रहा है, तो इसका मतलब कोई भी 100 प्रतिशत सही नहीं होगा। इसलिए सबके विचारों में अंतर होगा। आपका यथार्थ परिचय कि आप असल में कौन हैं? क्या महसूस करते हैं? क्या सोचते हैं? आप सारा दिन क्या करते हैं? आपका सही परिचय कौन देगा? आप खुद देंगे ना! वो सब आपके इतने करीब हैं लेकिन वे यथार्थ परिचय नहीं दे पा रहे हैं। कोई गलत नहीं होगा, लेकिन कोई भी 100 प्रतिशत सही भी नहीं होगा। जब तक आप अपना 100 प्रतिशत सही परिचय खुद नहीं देंगे तब तक स्पष्ट नहीं होगा। हज़ारों वर्षों से धर्मात्माओं ने, महात्माओं ने, संत आत्माओं ने, अलग-अलग लोगों ने आकर हमें उस परमात्मा का परिचय दिया है। हरेक ने उसे जिस दृष्टि से देखा, जिस सम्बन्ध से उसको पहचाना और जिस सम्बन्ध से उसको जाना उसी अनुसार उसका परिचय दिया। अलग-अलग किसी की बात नहीं कर रहे थे, वे सब एक ही शक्ति का परिचय दे रहे थे। उनमें से कोई भी गलत नहीं था जिन्होंने भी परमात्मा का परिचय दिया, लेकिन फिर भी सबके परिचय में थोड़ा-थोड़ा अन्तर आ गया, इसका मतलब कोई भी 100 प्रतिशत सही नहीं था। उन्होंने जिस दृष्टिकोण से देखा वैसा परिचय दिया। तो अब परमात्मा का सही 100 प्रतिशत यथार्थ परिचय कौन देगा? परमात्मा खुद देंगे। अगर आपको परमात्मा का सही परिचय चाहिए तो वो आपको तभी मिलेगा जब वो खुद आकर अपना परिचय देगा। अगर हम में से कोई भी उसका परिचय देते हैं तो फिर भी थोड़ा सा अंतर आयेगा। परमात्मा जब स्वयं आकर अपना परिचय देते हैं तो वो परिचय बड़ा सरल होगा। हमने तो परमात्मा का परिचय बड़ा जटिल कर दिया था क्योंकि हम सत्य नहीं जानते हैं। लेकिन इस सारे सृष्टि चक्र में एक ऐसा समय आता है जब परमात्मा स्वयं आकर अपना परिचय देते हैं और वो परिचय बहुत आसान और 100 प्रतिशत यथार्थ होता है। और जब आप 100 प्रतिशत यथार्थ रूप से किसी को जान लेते हैं, फिर उसके साथ रिश्ता जोड़ना बहुत सरल हो जाता है।

-ब्र.कु.शिवानी,जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

भगवान रचयिता है और प्रकृति उसकी रचना है फिर उसकी रचना को ही रचयिता हम कैसे मान सकते हैं? जैसे एक कुम्हार है बहुत सुंदर सा मटका बनाता है, उस मटके को देखकर हमें उसकी याद आ सकती है लेकिन वो परमात्मा नहीं है। फिर हम कहते हैं आत्मा सो परमात्मा मतलब आत्मा ही परमात्मा है। एक तरफ हम कहते हैं तुम मात-पिता हम बालक तेरे और फिर दूसरी तरफ कहते हैं आत्मा ही परमात्मा है। बच्चा पिता के जैसा हो सकता है लेकिन बच्चा ही पिता बन जाये, वो संभव नहीं है। वो किसी और रचना का पिता बन सकता है लेकिन वो अपना ही पिता नहीं बन सकता। उसका पिता उसका अपना ही रहेगा। फिर कहते हैं कि परमात्मा के ही अंश हैं हम और परमात्मा में ही समा जायेंगे या हम कहते हैं कि कण-कण में परमात्मा है। अधिकतर लोग आजतक ये मानते हैं कि हरेक के अंदर परमात्मा है और उसके पीछे भी कुछ भाव रहा होगा। लेकिन हमें अपने आप से पूछना होगा कि जो सर्वशक्तिवान है, जो ऑलमाइटी अथॉरिटी है, जो शांति का सागर है, जो प्रेम का सागर है, पवित्रता का सागर है वो मेरे अंदर बैठा है? अगर वो मेरे अंदर बैठा है तो मेरा मनोभाव क्या होना चाहिए? अगर शांति का सागर आपके अंदर बैठा है तो क्या क्रोध आ सकता है, दु:ख आ सकता है, चिंता हो सकती है, जो दृष्टिकोण आज हमारा है उसका अंश भी नहीं हो सकता।

वेगुसराय-विहार। 'अलविदा तनाव तथा तनावमुक्ति राजयोग शिविर' के दौरान मंच पर शिव ध्वज लहराते हुए मेयर उपेन्द्र सिंह, पूर्व मंयर संजय सिंह, सेंट जोसफ स्कूल के डायरेक्टर अभिषेक सिंह, अक्षय कुमार साहू,आर.एम.,एल.आई.सी., राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. पूनम,इंदौर, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कंचन तथा अन्य।

शिमला-हि.प्र.। राजयोग शिविर के पश्चात् समूह चित्र में कमाण्डेंट ऋषि राज सिंह, असिस्टेंट कमाण्डेंट सुरेन्द्र भट्ट, एज्युकेशन ब्रांच हेड चन्द्र शेखर पाण्डेय तथा विभिन्न बटालियन्स के जवानों के साथ ब्र.कु. सुनीता तथा ब्र.कु. यशपाल।

नेपाल-फत्तेपुर। 'तनाव मुक्ति' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मेयर उत्तम गौतम, वडा अध्यक्ष नारायण आचार्य, ब्र.कु.भगवान,शांतिवन ब्र.कु. भगवती तथा ब्र.कु. नीरा।

अमरोहा-उ.प्र.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् नवनिर्वाचित पालिकाध्यक्ष अतुल जैन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अर्चना तथा ब्र.कु. पूनम।

बाढ़-विहार। 'अखिल भारतीय किसान सशक्तिकरण अभियान तथा नई शाखा' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए भाजपा अध्यक्ष डॉ. सियाराम, आर.जे.डी. प्रेसीडेंट राजीव, ब्र.कु. ज्योति तथा अन्य।

सहारनपुर-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ एवं ब्र.कु. रजनी तथा ब्र. कु. रानी के समर्पण समारोह में मंचासीन हैं ब्र.कु. देव,शांतिवन, ब्र.कु. प्रेम बहन,पंजाब, ब्र.कु. अमीरचंद, सांसद राघव लखनपाल, एस.एस.पी. बबलू कुमार, जिला मजिस्ट्रेट पी.के. पाण्डेय, ब्र.कु. कोमल तथा ब्र.कु. अनीता।

काठमाण्डू-नेपाल। विश्वशान्ति भवन ठमेल सेवाकेन्द्र के स्वर्ण जयंती महोत्सव में नेपाल की राष्ट्रपति महामहिम विद्या देवी भण्डारी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी। साथ हैं ब्रह्माकुमारीज़ के अति. सचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन, राजयोग प्रशिक्षक ब्र.कु. रामसिंह तथा ब्र.कु. किरण।

झज्जर-हरियाणा। 'गीता महोत्सव' के दौरान आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं आध्यात्मिक पुस्तकों का अवलोकन करते हुए हरियाणा के वन एवं लोकप्रशासन मंत्री राव नरबीर सिंह। साथ हैं डी.सी. एस.गोयल, ए.डी.सी. सुशील श्रवण, ब्र.कु. संतोष व अन्य।

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। ब्र.कु. अनुसुइया, भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व खिलाड़ी बिशन सिंह बेदी, ब्र.कु. आशा दीदी, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, फिल्म अभिनेत्री एवं समाज सेविका प्रियंका कोठारी, ब्र.कु. चक्रधारी दीदी तथा ब्र.कु. रोहित।

कोटा-कुन्हाड़ी(राज.)। सी.आर.पी.एफ. कमाण्डेंट चेतन चिता को राष्ट्र के प्रति निष्ठा एवं समर्पण भाव के लिए सम्मानित करने के पश्चात् उनके साथ मंचासीन हैं उनके पिता रामगोपाल चिता, ब्र.कु. उर्मिला तथा अन्य।

आगरा-शास्त्रीपुरम। सेवाकेन्द्र के वार्षिक समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए ज़ोन इंचार्ज ब्र.कु. शीला, ग्रामीण विद्यायक हेमलता दिवाकर, नंदकिशोर मृगरानी, सत्येन्द्र सिंह, ब्र.कु. ज्योत्सना, ब्र.कु.सरिता, ब्र.कु.गीता, ब्र.कु.मधु।

लखनऊ-मुंशी पुलिया(उ.प्र.)। 'कर्मों की गुह्य गति' पुस्तक का विमोचन करते हुए ब्र.कु. जयश्री तथा स्पार्क चैप्टर परिवार के सदस्य।

पहचानें मन की अद्‌भुत शक्ति को

सेवा हमारी है, हमारे का अर्थ यहाँ तन से नहीं मन से है। जीवन उन बातों से बिल्कुल भी अछूता नहीं है जिन्हें हम जानते तो हैं लेकिन अमल नहीं करते। सबसे पहले दुनिया में लोग जब प्रात:काल उठते हैं, तो थोड़ा बहुत मंत्र जप कर परमात्मा का नाम लेते हैं और नाम लेते-लेते यह कहते कि हमारा आज का दिन अच्छा गुजरे। आप सोचिये ज़रा, सुबह का वो पाँच मिनट हमें इतनी शक्ति देता है कि पूरे दिन को हम ऊर्जान्वित कर पाते हैं। इसे कहते हैं सकारात्मकता से शुरुआत।

समाज इन बातों पर अमल भले ना करे लेकिन हमारे बड़े बुजूर्गों का अनुभव यही कहता है कि जब हम अपने आपको अनुभवों के साथ जोड़ते जाते हैं तो हम शक्तिशाली होते जाते हैं। कुछ हद तक उनका अनुभव हम सारे बच्चे भी करते आये, लेकिन पूरी तरह से समझ नहीं पाये थे। उनका हर एक अनुभव एक शक्ति के रूप में हमारे साथ चलता है, चला आ रहा है। आज भी अगर उन अनुभवों को हम थोड़ा सा साइंस की कसौटी पर लेकर चलें तो चमत्कार हो सकते हैं। उदाहरण के रूप में - एक बुजूर्ग का अनुभव है कि हम दिन-रात प्रकृति के बीच में रहते हैं, खेतों के बीच में रह हरियाली देखते हैं और उन्हें देखते बहुत दूर-दूर तक हमारी नज़र जाती है। आप सोचिये ज़रा, जब हम बहुत दूर तक देखते हैं तो हमारा दायरा बहुत बड़ा हो जाता है। इतना बड़ा कि कोई अवरोध नहीं, किसी तरह का कोई विघ्न नहीं, सिर्फ हम विस्तार को देख रहे हैं। उनका कहना था कि जितना हम खुली चीज़ों को देखते हैं उतना हमारा मन भी खुला होता जाता है। एक प्रैक्टिकल भी उन्होंने कराया कि एक बच्चे को खेतों के बीच में पढ़ने के लिए बिठाया जाये और दूसरे बच्चे को कमरे में बिठाया जाये जो 10x10 का हो। आप देखेंगे जो बच्चा खुले में पढ़ रहा हो, ओपन

स्पेस में होगा, उसका माइण्ड बहुत ब्रॉड होगा। वो चीज़ों को जल्दी ग्रहण कर लेगा, समझ लेगा। ऐसा नहीं कि कमरे में बैठा बच्चा उतना आसानी से नहीं समझेगा, समझेगा अवश्य, परन्तु उसका आई-क्यू लेवल घट जाता है। ये सारी बातें आपको भले थोड़ी सी अलग लगेंगी लेकिन ये बातें आज के दौर में सभी माइण्ड मैनेजमेंट ट्रेनर्स रखते हैं कि आप बच्चे को खुला स्पेस दो, उसे ज़्यादा नहीं बोलो। अब ये बातें क्या आपको नई लगती हैं..! नहीं ना। क्योंकि ये हैं पहले की। लेकिन आज हम उसको फिर से री-न्यू करने की कोशिश कर रहे हैं। इसीलिए आप देखो जितने भी बड़े-बड़े साइंटिस्ट हुए, इंजीनियर्स हुए, उन सबने जो भी रिसर्च किया वो एकांत में खुले स्पेस में किया। क्योंकि वहां पर कुछ भी ऐसा हर्डल नहीं है। बस करते गये। शुरू में ज़रूर थोड़ी समस्या आती है लेकिन बाद में वो सबके लिए एक इतिहास बन जाता है। कहने का भाव यह है कि मन हमारा आज बहुत सारी छोटी-छोटी रुकावटों के कारण विकसित नहीं हो पा रहा है, जैसे वाट्सएप्प, फेसबुक, यू-ट्यूब, इसके अलावा कमरे से बाहर नहीं निकलना, अंदर ही बैठे रहना। ये कुछ कारण हैं जो बच्चों को मानसिक रूप से बीमार कर रहे हैं। अनुरोध यह है कि थोड़ा अपने प्राकृतिक स्वरूप में हम पहले खुद को लायें, फिर उसी हिसाब से बच्चों को भी गाईड करें, ताकि आने वाले समय में वो कुछ अच्छा कर जायें। आज इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का दौर है और आप उसमें कभी भी जाकर सर्च कर सकते हैं कि क्या हमारे लिए ये सारी चीज़ें अच्छी हैं, हमारे माइण्ड को विकसित करती हैं? हमारे हिसाब से तो बिल्कुल भी नहीं। क्योंकि ये सूचनाएं हमको और ज़्यादा गर्त में लेकर गई हैं, ना कि हमारा विकास हुआ है। तो जागो और मन को जगह दो।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-8 (2017-2018)

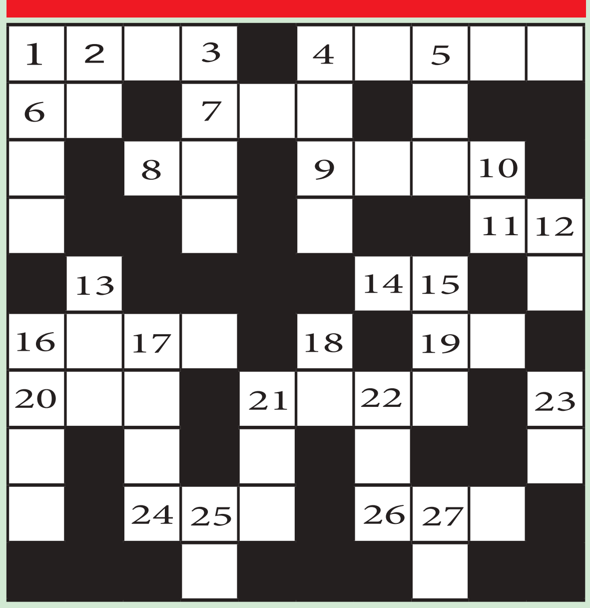

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. आज्ञा, आदेश (4)
2. तुम बच्चों को माया.... जगतजीत बनना है, विजय (2)
3. नसीब, भाग्य (4)
4. पशु, प्राणी, पशुओं सा व्यवहार करने वाला (4)
5. भारत की एक मुख्य नदी (3)
10. गीला, आर्द्र (2)
12. जीव, आत्मा (2)
13. विनाश, नाश, भयंकर बर्बादी (3)
15. बलवान, शक्तिशाली (3)
16. जुगाली करना, मनन-चिन्तन (4)
17. पायल की आवाज़ (4)
18. शक्ति, ताकत (2)
21. पुकारना, आवाज़ देना (3)
22. ज्वर, दिल का गुबार, भड़ास (3)
23. इन्कार, मनाही, रोकना (2)
25. चमड़ी, त्वचा, खाल (2)
27. मैं का बहुवचन (2)

बायें से दायें

1. मनुष्य से देवता बनने के लिए दैवी....धारण करो, मैनर्स (4)
4. बाबा जानी....है (5)
6. लीन, तल्लीन (2)
7. कहा गया वाक्य, वचन (3)
8. सरिता, सरि, नद, शैलजा (2)
9. आशीर्वाद,....लुटाने वाले (4)
11. आनन्द, सुख, लुत्फ (2)
14. महीना, 30दिन (2)
16. फँसना, अटकना (4)
19. समाप्त, केवल, पर्याप्त (2)
20. ज्ञान की धारणा से ही तुम बच्चे....और पूजन योग्य बनते हो (3)
21. ज्ञान की....बन टिकलू-टिकलू करते रहना है (4)
24. निर्माण, बनाना, बनावट (3)
26. ठहरना, स्थिर होना, निर्वाह करना (3)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन।

शिव अवतरण

ओमशान्ति मीडिया | महाशिवरात्रि विशेषांक | माउण्ट आबू

परमात्मा का शुभ आगमन समय चक्र में!!!

समय चक्र में ना तो समय से पहले कुछ प्राप्त होना है, ना तो समय बीत जाने के बाद। अगर कुछ प्राप्त होगा, तो समय रहते। इसकी गति इतनी तीव्र है कि उसे पहचानने के लिए हमें समयातीत होना होगा। जीवन को समय से पहले समय रहते तैयार कर उस शुभ अवसर को लाना होगा जिसके साथ सुख शांति और आनंद के तार जुड़े हुए हैं। आज जुड़ाव कहीं और है, इसलिए प्राप्ति दुःखदायी है। असंयमित जीवन को फिर से संयमित जीवन में परिवर्तित करने हेतु परमपिता परमात्मा शिव अवतरित होते हैं। बस हमें उन्हें पहचान कर, उनसे सम्बन्ध जोड़कर अपने जीवन को बदल लेना है व श्रेष्ठ बनाना है। तो अब हम आप और सभी समय चक्र में इस शुभ अवसर का लाभ लेकर अपने आप को धन्य बनायें। अब नहीं तो कब नहीं...।

मनुष्य की जीवन यात्रा में कई चक्र पुनः रिपीट हुआ करते हैं। जैसे आपने देखा होगा कि सुबह होती है, फिर दोपहर, फिर शाम, फिर रात, ये दिवस चक्र है। इसी प्रकार से

सोमवार से रविवार, फिर रविवार से सोमवार, ये सप्ताह चक्र है। ऐसे ही मौसम चक्र, ऋतु चक्र, मास चक्र, वर्ष चक्र, ये आते ही रहते हैं। कुल मिलाकर एक शब्द में अगर कहा जाए तो हर एक चीज़ अपने स्थान पर फिर से अपना एक साइकिल पूरा करके आती है। ऐसे ही इस सृष्टि चक्र में एक समय था, जिसको लोग सतयुग कहते थे, इसलिए हम सृष्टि चक्र को काल चक्र के साथ जोड़ सकते हैं। जो सार रूप में मानव मन की चार अवस्थाओं से बना हुआ माना जा सकता है। जिसको क्रमशः सतयुग, त्रेता युग, द्वापरयुग और कलियुग कहते हैं। इन अवस्थाओं में जो सतयुग और त्रेता की अवस्था थी, उस काल खंड में मानव बहुत शांत व सुखी था। लेकिन चक्र फिरने के साथ साथ मन की अवस्था भी बदलनी शुरू हो गई। उदाहरण के लिए, जो पूरे दिन में इंसान होता है, उसकी प्रकृति, उसका स्वभाव दिन में कुछ और होता है, लेकिन रात को उसी इंसान से मिलो तो उसकी अवस्था कुछ और होती है, ड्रेस अलग होता है, भाव अलग होता है व सोच अलग, लेकिन इंसान वही होता है। उसकी मनोस्थिति बदलती नज़र आती है। ऐसे ही जब सतयुग त्रेता का समय होता है, तब दिन की अवस्था होती है, उस समय सब अच्छा होता है, सबकुछ दिखाई देता है। जैसे जैसे रात अर्थात् द्वापर और कलियुग आता है, वैसे वैसे हमारी अवस्था में परिवर्तन आता है। इसका एक और उदाहरण है, कि आज भी लोग कहते हैं कि भारत सोने की चिड़िया था, अर्थात् चारो तरफ सुख-शांति-सम्पत्ति प्रचुर मात्रा में थी, शरीर स्वस्थ था व इंसानों को हम एक ऊँची अवस्था में देखते थे जिन्हें हम देवता कहते हैं। समय बीतने के उपरांत हम देवतायें नीचे की ओर सृष्टि चक्र में आये, उतरते चले गये और एक साधारण मनुष्य के रूप में जीवन जीने लगे। चूंकि यह चक्र बहुत धीमी गति से चलता है, अब वो रात की अवस्था पुनः परिवर्तित होने वाली है। आपको यह जानकर बहुत खुशी होगी कि ये चक्र फिर से रिपीट हो रहा है और परमात्मा द्वारा फिर से इस सृष्टि चक्र में समय के बाद और समय के पहले का जो समय है, जिसको हम संगमयुग कहते हैं, उसमें परमात्मा आकर अपना सत्य परिचय देकर हमें सतयुगी दुनिया का मालिक पुनः बनाते हैं। इस संगमयुग का समय हीरे जैसा माना जाता है। इस समय जिसने जो अवस्था बना ली, वो बना ली। हम सबकी यही चाह है कि राम राज्य इस धरा पर हो, जहाँ सुख-शांति-खुशी का साम्राज्य हो। तो हमें आपको ये बताते हुए अति हर्ष हो रहा है कि ऐसी दुनिया की स्थापना की घड़ी इस समय चक्र में आ पहुँची है जब स्वयं परमात्मा शिव का अवतरण इस महापरिवर्तन हेतु हो चुका है। तो आप भी तो ऐसी दुनिया में चलना चाहोगे ना...! और उसके लिए समय बहुत थोड़ा रह गया है। हमें समय से पहले तैयार होना ही पड़ेगा।

अरसों से विछड़ा हुआ साथी जब कभी हमसे मिलने आता है, तो हम फूले नहीं समाते। ऐसे ही हमारा परमात्मा पिता जो अरसों से हमसे बिछड़ा हुआ है, वो अब हमसे मिलने को आतुर है, और खुशियाँ लुटाने के लिए हमारे दर पर खड़ा है। तो इस शिवजयंती पर उन खुशियों को बटोर लो, कहीं झोली खाली न रह जाये। हम तो इन खुशियों का अनुभव कर रहे हैं, आप भी करके देखें..!!!

शुभकामना संदेश

सबको सुख चैन आराम देने वाले दिलाराम, जो हमारी भावनाओं को समझते हैं, हमपर पूरे बलिहार जाते हैं, अब वे इस धरा पर अवतरित हो चुके हैं। हम सभी अभी इसका पूरा-पूरा सुख ले रहे हैं। लेकिन हमारी ये दिल से आशा है कि हमारे भाई बहनें भी उस दिलाराम से सम्बंध जोड़कर इलाही सुख लें। भारत देश पुनः देव भूमि व धन धान्य से सम्पन्न बने जहाँ सुख शांति का अखुट भंडार होगा। वो सुनहरी घड़ियाँ हमारे सामने हैं, क्योंकि परमात्मा शिव के आगमन से नई दुनिया का आगमन निश्चित है। परमात्मा शिव की हम बच्चों प्रति यही शुभ आशाएं हैं कि जो कुछ मिला उसे जन जन को बांटो, कोई वंचित न रह जाये। इस महाशिवरात्रि के अवसर पर चारो ओर शिव संदेश फैलाओ ताकि पूरे विश्व के कोने कोने से एक ही आवाज़ आये कि हमारा परमात्मा इस धरा पर आ चुका है। इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ आपको शिव जयंती की हार्दिक शुभकामनाएँ। - ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी।

परमसत्ता से जुड़ाव शक्ति का आधार

हर असंभव कार्य संभव होगा, लेकिन उसके लिए ज्ञान और अनुभव बढ़ाने की आवश्यकता है। परमात्मा की सत्य पहचान और अपनी सत्य पहचान कर उससे सम्बन्ध जोड़ने की आवश्यकता है। इसके लिए अपनी इंद्रियों पर संयम भी ज़रूरी है। स्वयं को हर पल जागृत रख, उस परम सत्ता से योग रखने से हम स्वयं को बदल पायेंगे और उसका प्रभाव पूरे विश्व पर स्वतः ही पड़ेगा। सभी स्वयं को जागृत कर उस परमात्मा से सम्बन्ध जोड़कर अपने को सशक्त बनायें और निरोगी बन जायें। यही सभी के प्रति मेरी दिल से शुभकामना है। - प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी।

जानें 'सदा शिव' परमात्मा के स्वरूप को

सत्य तो सत्य है, जो एक लाइन का होता है। जैसे आप हैं, ये सत्य है। लेकिन आप नहीं हैं, ये भी एक सत्य है। वो उस समय के हिसाब से है। इस दुनिया में सबकुछ एक ऊर्जा है। और ऊर्जा ना तो उत्पन्न की जा सकती है और ना ही नष्ट की जा सकती है। उसका परिवर्तन होता है। वैसे ही हम सभी एक चैतन्य शक्ति आत्मा, अविनाशी ऊर्जा हैं, ये सत्य है। उसी प्रकार से इस अविनाशी ऊर्जा को ऊर्जान्वित करने का स्रोत परम शक्ति, परम सत्ता परमात्मा है, जिनका नाम 'शिव' है। हमारी ऊर्जा प्रकृति के वश में आने से या वशीभूत होने से नष्ट होती जाती है, जो कि स्वाभाविक है, लेकिन परमात्मा एक ऐसी ऊर्जा है जो प्रकृति के पाँचों तत्वों से परे है, जो कभी नष्ट नहीं होती। उसकी ऊर्जा हमेशा संग्रहित रहती है। इसी को अनेक धर्मों में अलग-अलग नामों से लोगों ने जाना, पहचाना, लेकिन उसे कोई स्वरूप नहीं दिया। क्योंकि निराकार को कोई स्वरूप देना, उसके रूप के साथ न्याय नहीं होगा। वो एक ज्योति बिन्दु ऊर्जा के रूप में है। इसीलिए शायद सभी धर्म पिताओं एवं अन्य समाज सुधारकों ने मूर्ति पूजा का पुरजोर विरोध किया, क्योंकि परमात्मा ज्योति बिन्दु स्वरूप ही हैं।

क्या हम भी मिल सकते हैं उनसे?

यह चमत्कारिक रहस्य परमात्मा शिव के बारे में है, जो अकल्पनीय हैं, अद्‌भुत हैं। वो इस धरा पर अवतरित होकर स्वयं अपना ज्ञान अर्थात् अपने बारे में सभी को बताते हैं, और इतने सरल शब्दों में व सहजता से बताते हैं कि किसी को भी समझ में आ जाए कि क्या करना है, क्या नहीं करना है। कारण ये है कि सबसे पहले परमात्मा हमको अपनी समझ देते हैं कि मैं तुम सभी आत्माओं का पिता हूँ, और पिता कभी भी अपने बच्चों को किसी भी बात के लिए उदास व हताश नहीं देख सकता। वे आकर कहते हैं, तुम अपनी सारी शक्तियों को भूल चुके हो, इसलिए तुमको मैं तुम्हारी शक्तियों की याद दिलाने के लिए आता हूँ। इसका मिसाल रामचरित मानस में है, कि हनुमान की शक्तियाँ कहीं खो गई थी, तो जब उन्हें समुद्र के पार जाकर सीता का पता लगाना था, उस समय जामवंत ने कहा कि क्यों चुप बैठे हो हनुमान, अर्थात् उसे उसकी शक्तियाँ याद दिलाई। ये हमारा ही यादगार है और हमारा मिसाल है कि हमें ही अपनी शक्तियों को जानना समझना है व अपने निजी स्वरूप में स्थित होना है। जिसके आधार से परमात्मा से मिलन सम्भव है।

परमात्मा ही गीता ज्ञान के दाता

गीता शब्द गीत से बना है, चूंकि गीत बहुत ही मधुर और मनमोहक होता है, जिसे सभी लोग सुनकर आनंद विभोर हो जाते हैं। उसी प्रकार परमात्मा अपने साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा जो ज्ञान देते हैं, वो भी एक गीत की तरह है, जिसे बहुत ध्यान से सुनकर उस पर अमल कर उसका आनंद ले मनमोहक 'कृष्ण' पैदा होता है। परमात्मा शिव सच्चा गीता ज्ञान दाता है, जिस गीता को सुनकर ही मनमोहन की तरह बना जा सकता है।

श्रीमद्‌भगवद् गीता के लिए संसार में लोग कहते हैं कि इसे सुनकर मोक्ष व स्वर्ग की प्राप्ति होती है और जीवन के अंतिम क्षणों में गीता ज़रूर सुनी चाहिए, ये एक मान्यता है। ये विचारणीय है कि बहुतों ने इस जीवन के दौरान और अंतिम क्षणों में गीता सुनी व पढ़ी है लेकिन क्या उन्हें मोक्ष या स्वर्ग मिला होगा? आज उसी मोक्ष व स्वर्ग को दिलाने के लिए परमात्मा स्वयं इस धरा पर अवतरित हो सहज गीता ज्ञान से स्वर्णिम संसार लाने का अद्‌भुत कार्य कर रहे हैं। वैसे भी गीता में वर्णित है कि मुझ परमात्मा को समझने व जानने के लिए दिव्य चक्षु अर्थात् दिव्य ज्ञान चाहिए। उसके बिना मैं जाना नहीं जा सकता। भगवान शिव के इस ज्ञान को ही गीता कहा जाना चाहिए, ऐसा हमारा मानना है। जिसे सभी समझकर उस राह पर चल अपने जीवन में अपनाकर देवत्व ला सकते हैं। गीता-ज्ञान उस ज्ञान के सागर, पतित पावन, सर्व आत्माओं के परमपिता, मानव को देवता बनाने वाले, एक मात्र भगवान 'शिव' ने दिया था, जो कि श्रीकृष्ण के भी परमपिता हैं। श्रीकृष्ण ने तो उन परम सद्‌गुरू शिव से ही वह श्री नारायण पद प्राप्त किया था। इसलिए वृन्दावन में गोपेश्वर का मंदिर है, जिसमें दिखाया गया है कि भगवान शिव श्रीकृष्ण के भी पूज्य हैं और गोप-गोपियों के भी मान्य ईश्वर हैं।

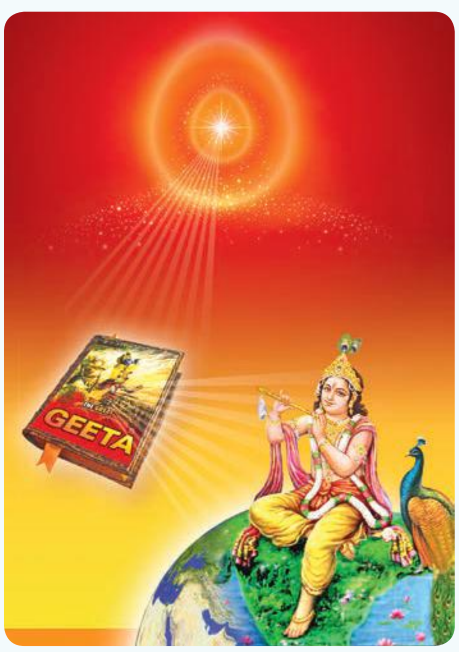

जी हाँ, हमने की है परमात्मा के स्वरूप की अनुभूति

पूरी तरह से तो कोई घटना सत्य नहीं मानी जाती। लेकिन जब कोई अपना अनुभव सुनाता है, तो उसमें वो बातें सामने आती हैं जो मानने योग्य होती हैं। उन्हीं माननीयों में कुछ महान आत्मायें शामिल हैं जिन्होंने अपने अनुभवों में परमात्म स्वरूप की अनुभूति को संजोया है। ऐसी ही कुछ अनुभूतियाँ उन्हीं के शब्दों में हम आपके सामने रख रहे हैं...।

इस ज्ञान से ही सुंदर भविष्य संभव

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की पढ़ाई का पहला उद्देश्य है कि व्यक्ति पहले स्वयं को जाने कि मैं कौन हूँ, मेरा कर्त्तव्य क्या है, मेरे माता-पिता कौन हैं, अपना असली देश क्या है, अपनी संस्कृति क्या है। मेरा मानना है कि आज जिस प्रकार शिक्षा पद्धति पश्चिमी होती जा रही है, तो अगर उसको फिर अपनी संस्कृति की ओर लाना है तो इसके लिए ऐसे ईश्वरीय विश्व विद्यालय का होना आवश्यक है। आज समाज की सबसे बड़ी ज़रूरत शांति है जो कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ही समाज को प्राप्त हो सकती है। उन्हीं के ज्ञान से सुंदर भविष्य आयेगा और समाज तथा राष्ट्र को उत्कृष्ट करेगा। - **शास्त्री जीवनदास,मैनेजिंग ट्रस्टी,श्री स्वामीनारायण गुरुकुल।**

बाबा से मुलाकात जीवन के सबसे सुखदाई पल

जो पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर शिव बाबा हैं, उनसे ध्यान लगाकर, मार्गदर्शन लेने का जहाँ एकत्रिकरण हो, जहाँ सभी लोग एक साथ बैठकर उनकी अनुभूति करें, वह है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय। जो विद्या साक्षात् ईश्वर की प्राप्ति करा दे, यह वही ज्ञान है। अगर विश्व में सुंदरतम से सुंदरतम कोई नगर है, तो वह है माउण्ट आबू में स्थित ब्रह्माकुमारीज़ आश्रम। ईश्वर की प्राप्ति केवल यहीं हो सकती है। साकार बाबा से मेरी तीन मुलाकातें हुईं और वे मेरे जीवन के सबसे सुखदाई पल थे।
- **डॉ. स्वामी केशवानंद सरस्वती, काशी।**

बाबा के सानिध्य में छोटे बच्चे जैसा अनुभव हुआ

समस्त विश्व में ऐसी व्यवस्था नहीं है जैसी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में है। यह अनुभव करने की बात है, बयाँ करने की बात नहीं है। मैं जब माउण्ट आबू में परमात्म मिलन के अवसर पर पहुँचा तो मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे एक छोटे बच्चे को अपने घर में माँ-बाप की गोद मिल गई हो। ऐसा लगा मानो वो मुझे सहला रहे हैं। यहाँ के पवित्र वातावरण और व्यवस्था जैसी पारदर्शिता संसार में और कहीं नहीं। - **महामण्डलेश्वर दर्शन सिंह त्यागमूर्ति, अध्यक्ष, षड्दर्शन साधु समाज एवं धर्म स्थान सुरक्षा ट्रस्ट, हरिद्वार।**

अल्लाह, खुदा का रूप निराकार ज्योति स्वरूप

अल्लाह, खुदा, गॉड व भगवान वास्तव में एक ही है। वह निराकार ज्योति है। पवित्र कुरान में एक लाख पैगम्बरों का वर्णन है, जिन्होंने समय-समय पर इस धरा पर अवतरित होकर मानव जाति को यह शिक्षा दी है कि परमात्मा एक है और वह ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है। ब्रह्माकुमारीज़ बहुत ही सरल ढंग से पूरे विश्व को यह शिक्षा दे रही है कि कैसे परमात्मा से अपना सीधा सम्बन्ध जोड़ें तथा उसकी इबादत करें। जिससे मन को शांति व सुकून की अनुभूति हो।
- **शाहवाज़ खान, प्रसिद्ध फिल्म कलाकार, मुम्बई।**

शिव को करके अर्पण, बनायें जीवन दर्पण

वर्तमान समय कलियुग का अंतिम चरण है। और ये सारा समय कालरात्रि अथवा महारात्रि ही है, जिस समय समस्त संसार के नर-नारी अंधकार में डूबे हुए हैं। अब परमात्मा शिव संसार को पावन और सुखी बनाने के लिए आत्माओं का आह्वान कर रहे हैं और प्रजापिता ब्रह्मा के तन द्वारा अवतरित होकर ज्ञानामृत पिलाकर सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। अत: उनकी आज्ञानुसार पवित्रता और शुद्धता का पालन कर हमें भी शिव पर अर्पण होकर संसार की सेवा करनी चाहिए। वास्तव में यही एक सच्चा पाशुपत व्रत है, जिसका फल मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति है। अब मनुष्य को चाहिए कि वो अपना नाता विकारों से तोड़कर परमात्मा शिव से जोड़े। शिवरात्रि एक दिन की नहीं है, बल्कि जब तक शिव परमात्मा इस अज्ञान रात्रि में अपना कर्त्तव्य कर रहे हैं, ये सारा समय ही शिवरात्रि है। जिसमें कि मनुष्य आत्मा को ज्ञान द्वारा ही जागरण मनाना चाहिए। यही रीति शिवरात्रि का त्योहार मनाने की सच्ची रीति है।

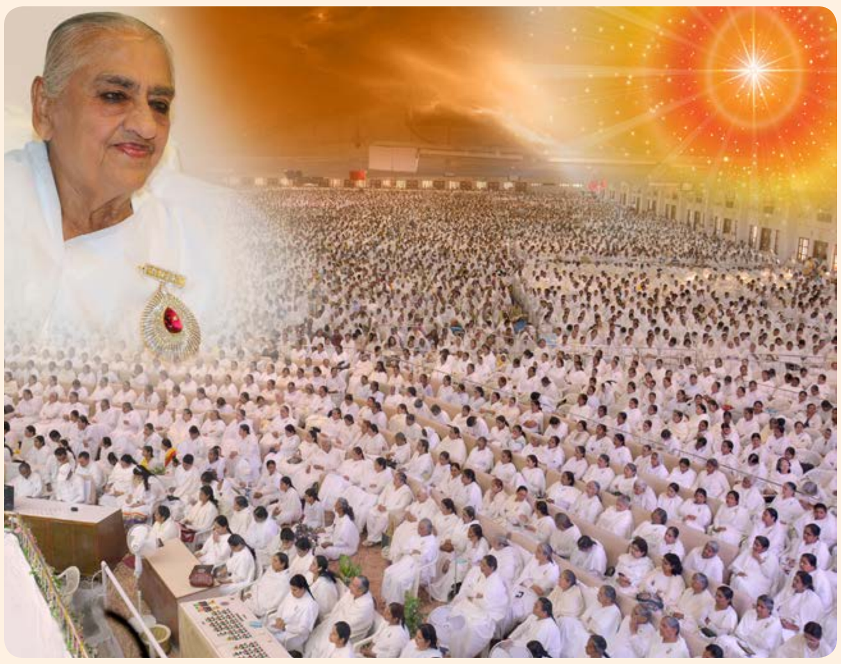

शिव परमात्मा की वर्तमान में अति आवश्यकता

आज मानव इतिहास एक ऐसे महत्वपूर्ण मोड़ पर आ पहुँचा है जहाँ एक ओर उत्थान की अनंत सीमाएँ व सम्भावनाएँ हैं, वहीं दूसरी ओर समूल विनाश की पूर्ण तैयारी है। विज्ञान और तकनीकि की प्रगति दूषित मस्तिष्क वाले मानव के हाथ का खिलौना है। उसने मानव को ऐसे बारूद के ढ़ेर पर लाकर खड़ा कर दिया है कि किसी भी समय विस्फोट हो सकता है। मानव अपने मूल स्वभाव, शांति, प्रेम, आनंद से अपना सम्बन्ध तोड़ चुका है, और भौतिक साधनों के चंगुल में फँसकर मानसिक तनाव बढ़ाता जा रहा है। आत्महत्या, हृदयाघात से मृत्यु, दिनों दिन प्रदूषण की मात्रा बढ़ना, यहाँ तक कि अनिद्रा के कारण लोग गोलियाँ खाकर सो रहे हैं। इसका कारण है, मानव मन का प्रदूषण इतना बढ़ गया है कि वो बंद नहीं हो रहा है। तनाव हर क्षेत्र में इतना अति में है कि उसका कोई पारावार नहीं है। अनुशासन का हर जगह अभाव है। अब आप बताओ, उपरोक्त बातों से आपको क्या लगता है, क्या ये परमात्मा के आने का अनुकूल समय नहीं है जहाँ हर जगह हताशा और निराशा है, अकल्याण है! यही अवसर है अपने आपको उस परम शक्ति से जोड़कर सुख शांतिमय स्थिति प्राप्त करने का। समय बहुत थोड़ा है, इसलिए हे मानव जागो और उस कल्याणकारी शिव से नाता जोड़ो।

इस तरह होता परमात्मा शिव का अवतरण

ये विषय बड़ा ही गम्भीर है, लेकिन जानने योग्य है कि शिव को अजन्मा भी कहते हैं और मृत्युंजय भी कहते हैं। जिनका जन्म भी नहीं होता और जिन्होंने मृत्यु को जीत लिया है। वे सदा मुक्त हैं, कर्मातीत हैं, इसलिए वे किसी के वश में नहीं। लेकिन फिर भी वे सबको मुक्त करने के लिए मुक्तिदाता बनकर आते हैं।

शिव पुराण में एक कथन है कि संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव, ब्रह्मा जी के ललाट से प्रकट होते हैं और उनको रूद्र (कोटि रूद्र संहिता-शिव पुराण) नाम दिया जाता है तथा वे ब्रह्मा मुख से सृष्टि की रचना करते हैं। ये वाक्य शिव पुराण में कई बार उल्लिखित है कि परमात्मा शिव ब्रह्मा के द्वारा अवतरित होकर सतयुगी सृष्टि को रचते हैं। यदि शिवरात्रि के आध्यात्मिक रहस्य को पूर्ण रूपेण समझा जाए, तो विश्व परिवर्तन अति सहज हो सकता है। क्योंकि

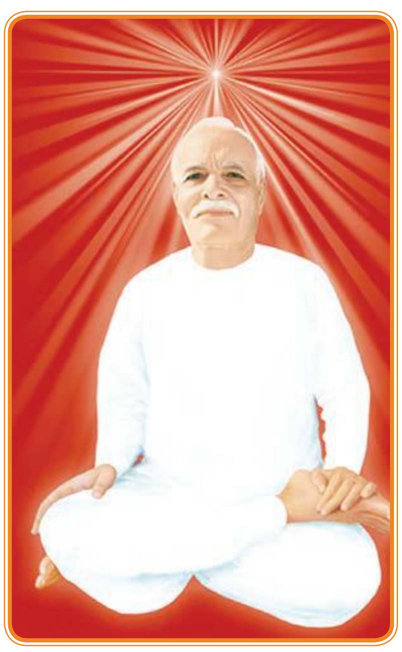

ये सिर्फ शैव सम्प्रदाय के भक्तों का पर्व नहीं, बल्कि पूरे विश्व के धर्म का एक पर्व है। कुछ उदाहरणों के द्वारा हम इसको देख सकते हैं, जैसे महाभारत में उल्लिखित एक वाक्य 'सबसे पहले जब सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी, तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई और वही नये युग की स्थापना के निमित्त बनी। उसने कुछ शब्द उच्चारे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया।'

इसी प्रकार मनुस्मृति में भी लिखा है कि 'सृष्टि के आरंभ में अण्ड प्रकट हुआ, जो हजारों सूर्यों के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था।' इसी प्रकार यहूदी, ईसाई व मुसलमानों के धर्म पुस्तक 'तोरेत' में भी इसी तरह सृष्टि का आरंभ माना जाता है कि ईश्वर की आत्मा पानी पर डोलती थी और आदि काल में परमात्मा ने आदम और हव्वा को बनाया, जिसके द्वारा स्वर्ग रचा।

इन अध्यात्म प्रेमियों का जीवन कुछ नया करने हेतु

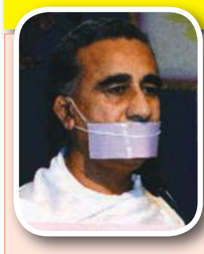

ब्रह्माकुमारी संस्था के संदेश को पूरे विश्व में जाना चाहिए। यहाँ से जो धारा बहेगी, जो तरंगें जाएंगी, ज़रूर जन-जन को आप्लावित करेंगी, शांति प्रदान करेंगी तथा आनंद से सराबोर करेंगी। यहाँ अलौकिकता है, आत्म-भाव है, मैत्री भाव है। ना तो कोई सूक्ष्म हिंसा ना स्थूल। यहाँ भेद नज़र नहीं आता, सब अभेद है। जिनके अंदर समर्पण भाव होगा, वही ब्रह्माकुमारी संस्था में आ सकते हैं। यही मेरा अनुभव है कि मुझे लगता है कि ब्रह्माण्ड में कुछ विशेष घटित होना है, बस थोड़ा समय बाकी रहा हुआ है कि जब इन अध्यात्म प्रेमियों का जीवन बनेगा प्रेरणा, श्रेष्ठ समाज के निर्माण के लिए। जैसे गोवर्धन पर्वत उठाने के लिए सबने अपनी अंगुली दी, वह अंगुली है इस अभियान में एक संकल्प में बंधने की। **-जैन मुनि अरविन्द कुमार,राजपुरा,पटियाला।**

जी हाँ, हमने की है परमात्मा के स्वरूप की अनुभूति

मानवता व दिव्यता का प्रत्यक्ष रूप

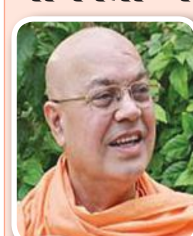

जिस प्रकार की यहाँ पवित्रता, प्रेम, मानवता तथा दिव्यता है, ऐसी हर घर में हो। मैं दादीजी सहित अनेक ब्रह्माकुमार भाई-बहनों से मिला, उनमें एक अनोखी अलौकिकता का अनुभव हुआ। शास्त्रों में जिन विकार रहित योगियों का वर्णन है वह इन सभी आत्माओं द्वारा प्रत्यक्ष अनुभव हो रहा है। मैं चाहूंगा कि हर घर में इनके जैसा ही स्वरूप हो, हर घर में ब्रह्माकुमारियों का ओजस हो। **-श्री स्वामी अध्यात्मानंद जी महाराज,अध्यक्ष, शिवानंद आश्रम, अहमदाबाद।**

अभी ही...परमात्म ज्ञान की आवश्यकता

कलियुग को अज्ञान अंधकार का समय बताया गया है। जहाँ अंधकार है, वहीं तो सूर्य की रोशनी की हम कामना करते हैं। ऐसे समय पर वास्तव में ज्ञान सूर्य परमात्मा के दिव्य अवतरण की आवश्यकता पड़ती है। आज चारो ओर अज्ञान अंधकार के मध्य मानव का जीवन व्यतीत हो रहा है। लेकिन हमने इस संस्थान में देखा कि परमात्मा के ज्ञान द्वारा यहाँ मनुष्य स्वयं को रोशन कर रहा है। मुझे ये महसूस हो रहा है कि वास्तव में सिवाय परमात्मा के ये रोशनी कोई दे न सके। **-अंतर्राष्ट्रीय धर्मगुरू आचार्य तानपाई,नेपाल।**

ब्रह्माकुमारी संस्था करती सुसंस्कृत इंसान का निर्माण

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से आप सब लोग जो सेवा कर रहे हैं उस सेवा की कोई कीमत नहीं हो सकती है। ऐसी सेवा को मैं नमन करता हूँ। इतना बड़ा त्याग करना आसान नहीं है। यह तो परमात्मा शिव की कृपा हमारे ऊपर हुई जो हम उनके सानिध्य में आ गये वरना ये सबके भाग्य में नहीं है। उसके लिए प्रालब्ध होना चाहिए, हमारा पुण्य कर्म संचित है, तभी हमें परमात्मा शिव बाबा के पास आने का सौभाग्य मिलता है। ब्रह्माकुमारीज़ के विद्यालय तो बहुत हैं, देश में हैं, विदेश में हैं, कम विद्यालय नहीं हैं। उन सब विद्यालयों का एक ही उद्देश्य है सुसंस्कृत इंसान का निर्माण। हमने बहुत से लोगों का निर्माण किया है, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील बनाये, लेकिन जिस संस्कार की आवश्यकता थी वो हम नहीं दे पाये, लेकिन ये विद्यालय हर व्यक्ति चाहे वो कोई भी हो, उसे बिना अपेक्षाओं के सुसंस्कृत बनाने का कार्य कर रहा है। **- अन्ना हज़ारे,प्रसिद्ध समाजसेवी।**

सभी ने परमात्मा को ज्योति बिन्दु रूप में ही किया याद

चारो दिशाओं में सभी ने जाने-अनजाने शिव ज्योति बिन्दु को ही परमात्मा पिता के रूप में स्वीकार किया है। भले वो मान्यतायें इतनी ज़्यादा प्रभावी नहीं हैं, फिर भी लोग उन मान्यताओं पर चलने की कोशिश करते हैं।

सबसे पहले इसकी शुरुआत हम मुस्लिम धर्म से करते हैं। उनकी ये मान्यता है कि मक्का में रखे हुए पवित्र पत्थर का दर्शन जीवन में एक बार अवश्य करना चाहिए। उस पत्थर को 'ओवल शेप' में रखा गया है। उसे 'संगे असवद' कहते हैं और 'अल्लाह' भी कहते हैं। उसे कई 'नूर ए इलाही' भी कहते हैं। नूर मतलब प्रकाश। इसलिए हर मुसलमान जब भी नमाज़ पढ़ता है, तो मक्का की दिशा में ही मुख करके पढ़ता है।

जीसस ने भी कहा, 'गॉड इज़ लाइट, आई एम द सन ऑफ गॉड।' उन्होंने कभी नहीं कहा कि 'आई एम गॉड।' वहीं पर 'ओल्ड टेस्टामेंट' में दिखाया है कि हज़रत मूसा जब माउण्टेन पर गये तो उन्हें परम ज्योति का साक्षात्कार हुआ, जिसको उन्होंने नाम दिया 'जेहोवा'। इसलिए चर्च में आप जायेंगे तो वहाँ मोमबत्तियाँ जलती हुई मिलेंगी, जो परमात्मा के निराकार स्वरूप का प्रतीक है। वहीं सिक्ख धर्म में भी गुरुनानक जी ने 'एक ओंकार सतनाम, कर्ता पूरख...', ये सब महिमा गुरबाणी में लिखी है। उन्होंने भी परमात्मा को निराकार स्वरूप में देखा।

पारसियों में भी 'अग्यारी' में जायेंगे तब वहाँ पर 'होली फायर' मिलता है। कहा जाता है कि जब पारसी ईरान से भारत आये तो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा ले आये, जिसको कहते हैं अखण्ड ज्योत। जिसे उन्होंने परमात्मा का दिव्य स्वरूप कहा। वहीं भारत में परमात्मा के प्रतीकात्मक रूप में पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण हर स्थान पर शिवलिंग की स्थापना है। जिन शिवलिंगों के नाम या तो नाथ के साथ जुड़े हैं, या तो ईश्वर के साथ जुड़े हैं। जैसे बबूल नाथ, भोलेनाथ, सोमनाथ। ईश्वर में रामेश्वर, गोपेश्वर, पापकटेश्वर आदि। इस प्रकार ये सब भी परमात्मा के ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप होने का प्रमाण देते हैं। अन्य देशों में शिवलिंग के या परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु के नाम जैसे बेबिलोन में 'शिऊन', मिश्र में 'सेव', फिज़ी में 'सेवाजिया', रोम में 'प्रियपस' आदि स्थानों पर भी शिवलिंग की पूजा इन नामों के आधार से की जाती है। इस प्रकार सभी धर्मपिताओं तथा धर्म ग्रन्थों ने भी स्पष्ट रूप से ये दर्शाया है कि परमात्मा शिव ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप ही हैं, और वे हम सभी आत्माओं के परमपिता परमात्मा हैं और उन्होंने ही इस सृष्टि की रचना की है।

कैसे पहचानें अपने प्यारे परमपिता को

भगवान के बारे में आज यथार्थ परिचय किसी के पास भी नहीं है। कोई भगवान को कण-कण में कहता, कोई कहता प्रकृति ही भगवान है, कोई कहता हम सभी भगवान हैं। इतनी ज़्यादा भ्रम की स्थिति क्यों है? जिसको भी हमने देखा, उसी को भगवान कह दिया। क्या ये सत्य है? जैसे जौहरी के पास एक कसौटी होती है जिसपर कसकर वो सोने को परखता है, ठीक वैसे ही हम भी कुछ मान्यताओं की कसौटी पर भगवान को कसकर देखें कि कल अगर भगवान हमारे सामने आ जाये तो हम उसे पहचान सकें, ताकि बाद में पछताना ना पड़े। आज हम आपको भगवान को परखने की कसौटी दे रहे हैं। **वो कसौटी पाँच मुख्य बातों पर आधारित है।**

पहला, भगवान वो हो सकता है जो सर्व धर्म मान्य हो। जिसको सभी धर्म वाले परमात्मा स्वीकार करें, उसको हम सत्य कहेंगे। जैसे एक व्यक्ति को कोई भाई कहता, कोई मामा कहता, कोई पिता कहता, लेकिन स्वरूप तो वही रहता है, स्वरूप तो नहीं बदल जाता ना। उसी प्रकार चाहे ईश्वर कहो, अल्लाह कहो, खुदा कहो, लेकिन उसका स्वरूप नहीं बदलेगा, सत्य यही है। **दूसरी कसौटी है,** परमात्मा वो है जो सर्वोच्च हो। जिसके ऊपर कोई ना हो। उसका ना कोई माता पिता हो, ना बन्धू हो, ना सखा हो, ना शिक्षक। उसे कहेंगे परमात्मा।

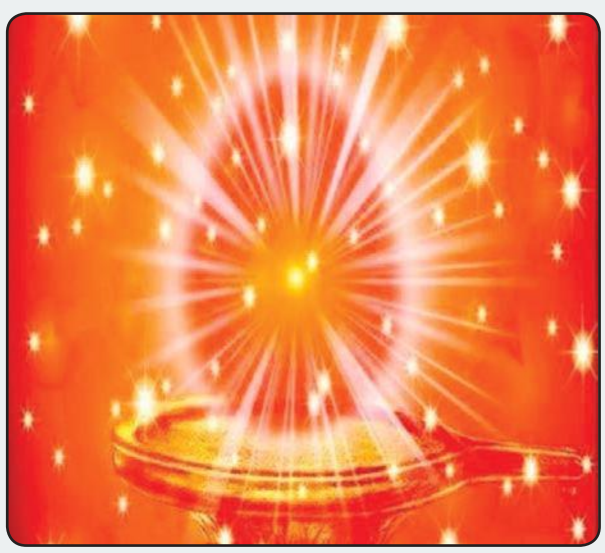

तीसरा, परमात्मा उसे कहा जायेगा जो सर्वोपरी हो। अर्थात् जिसका जन्म-मरण के चक्र से कोई नाता ना हो। परमात्मा को अजन्मा कहते हैं। अजन्मा के साथ साथ ये भी कहा जाता है कि उसे काल कभी नहीं खा सकता।

चौथा, परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्वज्ञ हो। जिसको तीनों कालों और तीनों लोकों का ज्ञान हो, जो त्रिकालदर्शी हो।

पाँचवा, परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्व गुणों में अनंत हो। जिसकी महिमा के लिए कहते कि धरती को कागज़ बनाओ, समुंदर को स्याही बनाओ और जंगल को कलम बनाओ तब भी उसकी महिमा लिखी न जा सके। तो ये हैं परमात्मा को परखने की वास्तविक पाँच कसौटी। जिस कसौटी पर हमें अपनी मान्यताओं को कसकर देखना है कि क्या वो सत्य है। जल्दी ही अपने सत्य पिता को पहचान लो। कहीं उसे पहचानने में देर न हो जाये।

शंकर, राम और कृष्ण के भी आराध्य 'शिव'

आज तक हमने परमात्मा शिव और शंकर को एक ही रूप में देखा, जाना, पूजा और याद किया। लेकिन यदि हम इनके बीच अंतर पर गौर करें तो हम पायेंगे कि शंकर सदा शिव की याद और आराधना में मग्न हैं। शंकर देवता हैं जबकि शिव परमपिता परमात्मा।

श्रीराम ने भी ज्योतिर्लिंगम शिव की पूजा की और उनसे शक्तियाँ प्राप्त कर रावण पर विजय प्राप्त की। वो ज्योतिर्लिंग रामेश्वरम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। रामेश्वरम अर्थात् राम के ईश्वर। इससे सिद्ध होता है कि शिव राम से भी ऊपर हैं।

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में स्वयं श्रीकृष्ण ने थाणेश्वर-सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता सर्वशक्तिवान की आराधना की और शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से भी शिव की पूजा करवाई।

क्या आप भी खुशियों की तलाश में हैं? कहीं आप अपने मन की परेशानियों से जूझ तो नहीं रहे? कहीं आप अपने परिवार और सम्बन्धों से टकराव के दौर से तो नहीं गुज़र रहे? तो देखिये आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' चैनल।

स्थानीय सेवाकेन्द्र का पता:-

कथा सरिता

तू भी अपनी कीमत जान

माइकल जब 13 साल का हुआ तो उसके पिता ने उसे एक पुराना कपड़ा देकर उसकी कीमत पूछी। माइकल बोला एक डॉलर, तो पिता ने कहा कि इसे बेचकर दो डॉलर लेकर आओ। माइकल ने उस कपड़े को अच्छे से साफ़ कर धोया और अच्छे से उस कपड़े को फोल्ड लगाकर रख दिया। अगले दिन उसे लेकर वह रेलवे स्टेशन गया, जहां कई घंटों की मेहनत के बाद वह कपड़ा दो डॉलर में बिका। कुछ दिन बाद उसके पिता ने उसे वैसा ही दूसरा कपड़ा दिया और उसे बीस डॉलर में बेचने को कहा। इस बार माइकल ने अपने एक पेंटर दोस्त की मदद से उस कपड़े पर सुन्दर चित्र बना कर रंगवा दिया और एक गुलज़ार बाजार में बेचने के लिए पहुंच गया। एक व्यक्ति ने वह कपड़ा बीस डॉलर में खरीदा और उसे पाँच डॉलर की टिप भी दी। जब माइकल वापस आया तो उसके पिता ने फिर एक कपड़ा हाथ में दे दिया और उसे दो सौ डॉलर में बेचने को कहा। इस बार माइकल को पता था कि इस कपड़े की इतनी ज़्यादा कीमत नहीं मिल सकती। उसके शहर में मूवी की शूटिंग के लिए एक नामी कलाकार आई थीं। माइकल उस कलाकार के पास पहुंचा और उसी कपड़े पर उनके ऑटोग्राफ ले लिए। ऑटोग्राफ लेने के बाद माइकल उसी कपड़े की बोली लगाने लगा। बोली दो सौ डॉलर से शुरू हुई और एक व्यापारी ने वह कपड़ा 1200 डॉलर में ले लिया। रकम लेकर जब माइकल घर पहुंचा तो खुशी से पिता की आँखों में आंसू आ गए। उन्होंने बेटे से पूछा कि इतने दिनों से कपड़े बेचते हुए तुमने क्या सीखा? माइकल बोला - पहले खुद को समझो, खुद को पहचानो। फिर पूरी लगन से मन्ज़िल की ओर बढ़ो, क्योंकि जहाँ चाह होती है, राह अपने आप निकल आती है। पिता बोले कि तुम बिल्कुल सही हो, मगर मेरा ध्येय तुम्हें यह समझाना भी था कि अगर इंसान खुद के बने कपड़े को मैला होने के बाद भी इतनी कीमत बढ़ा सकता है, तो फिर वो परमात्मा अपने द्वारा बनाये हम इंसानों की कीमत बढ़ाने में क्या कोई कसर छोड़ भी सकता है? जीवात्मा भी यहां आकर मैली हो जाती है, लेकिन सतगुरू हम मैले जीवात्माओं को पहले साफ़ और स्वच्छ करते हैं, जिससे परमात्मा की नज़र में हम जीवात्माओं की कीमत थोड़ी बढ़ जाती है। फिर सतगुरू हम जीवात्माओं को अपनी रहनी के रंग में रंग देते हैं, फिर कीमत और ज़्यादा बढ़ जाती है। फिर सतगुरू हम पर अपने नाम की मोहर लगा देते हैं, फिर तो इंसान अपनी कीमत का अंदाज़ा ही नहीं लगा सकता।

लेकिन अफ़सोस! इतना कीमती इंसान अपने आप को कौड़ियों के दाम खर्च करते जा रहा है। उसे अपने आप की ही पहचान नहीं, उसे अपने ऊपर लगी सतगुरू के नाम रूपी कृपा और उस अपार दया की कद्र नहीं, क्योंकि अगर कद्र होती तो उसकी याद में अपना पूरा पूरा समय देकर अपने इंसानी जामे का मकसद और उसकी कीमत भी ज़रूर समझते।

निष्फल कुछ भी नहीं...

एक गाँव में एक किसान रहता था। उसके परिवार में उसकी पत्नी और एक लड़का था। कुछ सालों के बाद पत्नी की मृत्यु हो गई। उस समय लड़के की उम्र दस साल थी। किसान ने दूसरी शादी कर ली। उस दूसरी पत्नी से भी किसान को एक पुत्र प्राप्त हुआ। किसान की दूसरी पत्नी की भी कुछ समय बाद मृत्यु हो गई।

किसान का बड़ा बेटा जो पहली पत्नी से प्राप्त हुआ था, जब शादी के योग्य हुआ तब किसान ने बड़े बेटे की शादी कर दी। फिर किसान की भी कुछ समय बाद मृत्यु हो गई। किसान के दोनों बेटे साथ ही रहते थे। कुछ समय बाद किसान के छोटे लड़के की तबीयत खराब रहने लगी। बड़े भाई ने कुछ आस पास के वैद्यों से उसका इलाज करवाया, पर कोई राहत ना मिली। छोटे भाई की दिन पर दिन तबीयत बिगड़ी जा रही थी और बहुत खर्च भी हो रहा था। एक दिन बड़े भाई ने अपनी पत्नी से सलाह की, यदि ये छोटा भाई मर जाए तो हमें इसके इलाज के लिए पैसा खर्च नहीं करना पड़ेगा। तब उसकी पत्नी ने कहा कि क्यों न किसी वैद्य से बात करके इसे ज़हर दे दिया जाए, किसी को पता भी नहीं चलेगा, रिश्तेदारी में भी कोई शक नहीं करेगा। सब सोचेंगे कि बीमारी से मृत्यु हो गई। बड़े भाई ने ऐसा ही किया। उसने एक वैद्य को कुछ धन देकर छोटे भाई को ज़हर देने की बात की। वैद्य ने बात मान ली और उसे ज़हर दे दिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। उसके भाई भाभी ने खुशी मनाई कि रास्ते का काँटा निकल गया, अब सारी सम्पत्ति अपनी हो गई। उसका अंतिम संस्कार कर दिया। कुछ महीनों बाद किसान के बड़े लड़के की पत्नी को लड़का हुआ! उन पति पत्नी ने खूब खुशी मनाई, बड़े ही लाड़-प्यार से लड़के की परवरिश की। जब लड़का जवान हो गया, तो उसकी शादी कर दी! शादी के कुछ समय बाद अचानक लड़का बीमार रहने लगा। माँ बाप ने उसका बहुत वैद्यों से इलाज करवाया। जिसने जितना पैसा मांगा उसने दिया ताकि लड़का ठीक हो जाए। अपने लड़के के इलाज में उसने अपनी आधी सम्पत्ति तक बेच दी, पर लड़का बीमारी के कारण मरने की कगार पर आ गया। उसका शरीर इतना ज़्यादा कमज़ोर हो गया कि अस्थि पंजर शेष रह गया था। एक दिन उसका पिता चारपाई पर लेटे अपने लड़के की दयनीय हालत देख कर दु:खी होकर उसकी ओर देख रहा था! तभी लड़का पिता से बोला, भाई! अपना सब हिसाब हो गया। बस अब कफन और लकड़ी का हिसाब बाकी है, उसकी तैयारी कर लो। ये सुनकर उसके पिता ने सोचा कि लड़के का दिमाग भी काम नहीं कर रहा बीमारी के कारण। वो बोला, बेटा मैं तेरा बाप हूँ, भाई नहीं। तब लड़का बोला, मैं आपका वही भाई हूँ जिसे आपने ज़हर देकर मरवाया था। जिस सम्पत्ति के लिए आपने ऐसा किया था, अब वो मेरे इलाज के लिए आधी बिक चुकी है। बस आपकी शेष है। हमारा हिसाब हो गया!

तब उसका पिता फूट-फूट कर रोते हुए बोला, कि मेरा तो कुल नाश हो गया। जो किया मेरे आगे आ गया। पर तेरी पत्नी का क्या दोष है जो इस बिचारी को जिन्दा जलाया जायेगा(उस समय सतीप्रथा थी, जिसमें पति के मरने के बाद पत्नी को पति की चिता के साथ जला दिया जाता था)। तब वो लड़का बोला, वो वैद्य कहाँ है जिसने मुझे ज़हर खिलाया था। तब उसके पिता ने कहा कि आपकी मृत्यु के तीन साल बाद ही वो मर गया था। तब लड़के ने कहा, ये वही दुष्ट वैद्य आज मेरी पत्नी के रूप में है। मेरे मरने पर इसे ज़िन्दा जलाया जायेगा।

परमेश्वर कहते हैं कि तुमने उस दरगाह का महल ना देखा,
धर्मराज लेगा तिल तिल का लेखा।
एक लेवा एक देवा दुतम, कोई किसी का पिता ना पुत्रम,
ऋण सम्बंध जुड़ा है ठाडा, अंत समय सब बारह बाटा ।।

शान्तिवन। ब्रह्माकुमारीज़ बहादुरगढ़ ने महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में बेरों से शिवलिंग बनाया। इसे विश्व कीर्तिमान, 'वंडर बुक ऑफ रिकॉर्ड्स इन्टरनेशनल लंडन' में स्थान मिला है। इसका प्रमाण पत्र राजयोगिनी दादी जानकी को भेंट करते हुए ब्र.कु. अंजली, ओमशान्ति मीडिया के संपादक ब्र.कु.गंगाधर, डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके तथा ब्र.कु. संदीप।

भुवनेश्वर-ओडिशा। धर्मेंद्र प्रधान,यूनियन मिनिस्टर,पेट्रोलियम एंड नैचुरल गैस को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.दुर्गेश नंदिनी। साथ हैं ब्र.कु. विजया, ब्र.कु. प्रकाश, ब्र.कु. हिरोज व अन्य।

आहोर-राज.। 'प्रभु दर्शन भवन' के उद्घाटन अवसर पर केक काटते हुए ब्र.कु. शुक्ला दीदी,दिल्ली, ब्र.कु. मीरा, ब्र.कु. गीता, प्रफुल्ल कुंवर, पंकज मीना, सोनीलाल, ब्र.कु. महेश,मुम्बई तथा अन्य।

हरमू रोड-राँची। सेवाकेन्द्र की प्रथम संचालिका ब्र.कु. रानी दीदी की पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ब्र.कु. निर्मला तथा अंजेला गोएनका।

लंदन। श्री फेथ फोरम द्वारा विभिन्न धार्मिक संस्थाओं के लिए आयोजित कार्यक्रम में 'बीइंग द हैप्पीनेस मैगनेट' प्रोजेक्ट के अंतर्गत ब्र.कु. मौरीन तथा ब्र.कु. दक्षा को सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया।

कटक-ओडिशा। साइंटिस्ट्स व इंजीनियर्स के लिए आयोजित 'नेशनल सेमिनार' का उद्घाटन करते हुए बायें से ब्र.कु. फकीर मोहन दास, डॉ हिमांशु पाठक,डायरेक्टर,एन.आर.आर.आई., प्रो.ई.वी. स्वामीनाथन, ब्र.कु. मोहन सिंघल, ब्र.कु.कमलेश दीदी, ब्र.कु. सुलोचना, डॉ.गोपाल चन्द्र मित्रा,पूर्व सेक्रेट्री,वर्क्स डिपार्टमेंट, ब्र.कु.भारत भूषण, ब्र.कु.नरेन्द्र पटेल, ए.के.पण्डा व अन्य।

शक्ति तो उन्हीं से मिलेगी

जिस प्रकार डेस्कटॉप, लैपटॉप, मोबाइल, आदि डिस्चार्ज होने पर उसे हम चार्जर से कनेक्ट करते हैं, जिसके बाद फिर से वो अपनी सुचारु अवस्था में आता है। उसी प्रकार से जब हम पूरी तरह से अपने विकारों में लिप्त होते तो हम डिस्चार्ज होते, लेकिन खुद को चार्ज करने के लिए हमारे पास कोई सोर्स नहीं है। हमारा ये मानना है कि सोर्स तो है लेकिन उस सोर्स का हमें पता नहीं है। अगर हम सोर्स को जान जायें और उससे कनेक्ट हो जायें तो हम भी चार्ज हो सकते हैं।

- ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

इस घटनाक्रम को ऐसे समझते हैं कि जब हम सभी ऊर्जायें एक साथ इस धरती पर आती हैं और अपना बहुत अच्छा खेल करती हैं अर्थात् सब आत्मायें अपना-अपना रोल प्ले करती हैं तो कुछ समय के बाद आत्माओं की ऊर्जा में कमी आती जाती है। यह ऊर्जा एक समय में इतनी ज़्यादा घट जाती है कि हमारा कर्म उससे प्रभावित होता जाता है, अर्थात् हम सभी के कर्म में गुस्सा, नाराज़गी, दु:ख, तकलीफ, बढ़ जाती है। इसलिए हमें शक्ति की ज़रूरत तो पड़ेगी ना! इसलिए हमें थोड़ा सा इस बात को समझकर शास्त्रगत रूप से, वैज्ञानिक रूप से, आध्यात्मिक रूप से, उस सोर्स के बारे में जानना चाहिए जिससे हम फिर से ऊर्जान्वित हो जाएं। करना कुछ नहीं है, बस थोड़ा सा प्रयास है जो हम आपसे शेयर करना चाहेंगे। होता क्या है... हम परेशान हैं लेकिन हम अपनी समस्या को किसी के सामने रखने में कतराते हैं, ये होना स्वाभाविक है लेकिन मानना तो पड़ेगा ना कि हमें चाहिए तो सही, शक्ति। हमारी व्यक्तिगत मत है कि इस दुनिया में हमारा कोई भी सम्बन्ध इतना शक्तिशाली नहीं है जो हमें किसी भी तरह से अपने स्वभाव से, अपनी चलन से, अपने बोल से, हमें हील कर सके, बल्कि हम और ही ज़्यादा दु:खी हो जाते हैं क्योंकि वो आत्मायें भी तो कमज़ोर हो चुकी हैं ना! हमें उन्हें समझने से पहले थोड़ा खुद को समझना पड़ेगा। समझ यह है कि हम कौन हैं और क्या हमारा अस्तित्व है इस दुनिया में। हम प्रकृति के वश हैं अर्थात् पंच महाभूत द्वारा शक्तियों का इस्तेमाल करते हैं। अर्थात् देखना, सुनना, सोचना, सब हम प्रकृति के द्वारा ही तो करते हैं, जिससे हमारी ऊर्जा नष्ट होती जाती है और हम सभी अपने आप को शक्तिहीन महसूस करते जाते हैं।

इस दुनिया में एक ऐसी भी शक्ति है जो प्रकृति के पाँचों तत्वों से परे और पार है। उस शक्ति को दुनिया में कॉस्मिक एनर्जी या ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कहते हैं। लेकिन इस ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के केन्द्र में एक परम शक्ति है जिसे हम परमात्मा की संज्ञा देते हैं। ब्रह्माण्ड को कुछ नामों से जानते हैं, जैसे परलोक, ब्रह्मलोक भी नाम देते हैं, ये एक तरह से धाम है अर्थात् रहने का पवित्र स्थान जहाँ आत्मायें रहती हैं। उदाहरण के रूप में... जैसे दिल्ली राजधानी है, लेकिन उसमें किसी एक स्थान पर प्रधानमंत्री का निवास स्थान है। वैसे ही परमधाम बहुत बड़ा है, जहाँ हमारे पिता और हम आत्मायें निवास करती हैं। उसे हम अपना वास्तविक घर कहते हैं, जहाँ से आकर हम अपना पार्ट प्रकृति के साथ मिलकर बजाते हैं। वही एक सोर्स है जो हमारी ऊर्जा को मूल स्वरूप में ले आने में सक्षम है। करना क्या है... सबसे पहले प्रकृति को भूल अर्थात् देह को भूलकर उस परम शक्ति से जुड़ाव करना है, ताकि हम फिर से रिचार्ज और फ्रेश हो सकें।

उपलब्ध पुस्तकें जो आपके जीवन को बदल दे

फर्रूखाबाद-उ.प्र.। जिलाधिकारी मोनिका रानी को ईश्वरीय निमंत्रण देने के बाद ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. मंजु।

मन की बात

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न: हम सभी धर्म को मानने वाले हैं। परन्तु आज देखा ये जा रहा है कि मनुष्य के कर्म उसके धर्म के अनुकूल नहीं रहे हैं। हम क्या करें जो कर्म धर्म के साथ जुड़ जाएं?

उत्तर: धर्म ने मनुष्य को श्रेष्ठ कर्म सिखाये। धर्म था ही मनुष्य के कर्म पर अंकुश लगाने के लिए। परन्तु समय बीता, मनुष्य में गिरावट आई व योंकि उसने धर्म का अनुसरण करना बंद कर दिया। परिणामत: धर्म मंदिरों तक सीमित रह गया या ग्रन्थों में सिमट गया। सभी धर्मों का यही हाल हुआ। इस कारण से मनुष्य के पास धर्म का बल नहीं रहा। अब पुन: आवश्यकता है कर्म को धर्म से जोड़ने की। धर्म मनुष्य को पवित्रता सिखाता है व श्रेष्ठ आचरण सिखाता है तो किसी आयु तक उसे संयमित जीवन जीना ही चाहिए। चार विशेष कर्म जीवन में ले आयें तो धर्म के साथ कर्म भी जुड़ जाएगा। सबको सुख देना, ईमानदारी से कार्य व्यवहार करना, मुख से मृदु व नम्रतापूर्ण वचन बोलना तथा लोभ व इच्छाओं का गुलाम न होना। इन श्रेष्ठ कर्मों को जीवन में अपनाने से पुण्य कर्मों का खाता बढ़ता रहेगा और धर्म के बहुत से उपदेश स्वत: ही जीवन में आ जाएंगे। इसके विपरीत यदि मनुष्य अति विषय वासनाओं में रहता है, यदि वह पाप कर्मों में प्रवृत्त रहता है, यदि वह दूसरों का धन हड़पता है और यदि वह दूसरों को सताता है, तो वह धर्म का अनुयायी नहीं है। कर्म, धर्म के साथ जुड़ जाए इसके लिए परमात्मा से योगयुक्त होकर शक्ति लेना भी आवश्यक है।

प्रश्न: बाबा हमेशा कहते हैं, कर्म करते हुए कर्म से न्यारे रहो। क्या यह सम्भव है - यदि हाँ तो कैसे?

उत्तर: मनुष्य का प्रत्येक कर्म उस पर अपना प्रभाव डाल रहा है, यों कहें कि कर्म उसे बांध रहे हैं अर्थात् वह कर्मबंधन में जकड़ता जा रहा है। परन्तु हमारा लक्ष्य है - कर्मातीत होना। कर्मातीत स्थिति का अर्थ है कर्म के प्रभाव से मुक्त रहना व कर्म के परिणाम के प्रभाव से भी मुक्त रहना। परन्तु यदि हम देहभान में रहकर कर्म करते हैं तो हमारे कर्म हमारे लिए बंधन का काम करते हैं, जबकि आत्मिक स्थित में रहकर किये जाने वाले कर्म दिव्य कर्म कहलाते हैं और ऐसे कर्म जीवन को दिव्य बनाने वाले हैं। हम ऐसे ढंग से कर्म करें कि हमें कर्मोपरांत यह लगे कि मानो हमने कुछ भी नहीं किया। यही आत्मा की निर्लिप्त स्थिति है। इसे ही कह दिया है कि आत्मा निर्लेप है। आत्मा निर्लेप नहीं है, बल्कि यह उसकी सम्पूर्ण योगयुक्त स्थिति है। कर्म करने से पूर्व हम जिस स्मृति में होते हैं, उसके वायब्रेशन्स पूरे कर्म को प्रभावित करते हैं। इसलिए हमारे कर्म दिव्य व अलौकिक हों, तो कर्म से पूर्व इस तरह अभ्यास करें। प्रथम- यह संकल्प नैचुरल कर दें कि मेरा हर कर्म परमात्म-अर्थ है। मैं अपने या परिवार के लिए कर्म नहीं कर रहा हूँ। बाबा से बातें करें -बाबा मेरा हर कर्म तुम्हारे लिए है। द्वितीय- कर्म के परिणाम को भी प्रभु अर्पण करें। चाहे परिणाम अच्छा हो या बुरा, महिमा हो या ग्लानि, हार हो या जीत, सब प्रभु अर्पण ....। तृतीय- अभ्यास करें कि मैं आत्मा इन कर्मेन्द्रियों से कर्म करा रही हूँ और बाबा हज़ार भुजाओं सहित मेरे साथ हैं। कभी यह अभ्यास करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ या मैं एक महान आत्मा हूँ। कभी परमात्म स्वरूप पर बुद्धि को स्थिर करके कर्म करें। ऐसा करने से कर्म करते भी न्यारेपन की अनुभूति होती रहेगी।

प्रश्न: हमारे यहाँ एक स्लोगन लिखा रहता है कि स्वयं को बदलो तो जग बदलेगा। इसका क्या अर्थ है और क्या एक व्यक्ति के बदलने से विश्व बदल जायेगा?

उत्तर: देखने में तो ऐसा ही लगता है कि अकेला चना क्या भाड़ फोड़ेगा! एक व्यक्ति अच्छा बन भी जाए तो इससे क्या होता है। परन्तु सत्य कुछ और है। आपको यह जानना चाहिए कि ये महावाक्य किसने किसको कहे! हम बता दें- स्वयं भगवान ने देवकुल की महानात्माओं के लिए ये वचन उच्चारे। वे आत्माएं इष्टदेव, देवी हैं और पूर्वज हैं। उन एक-एक महानात्माओं से लाखों महानात्माएं जुड़ी रहती हैं। उनका परिवर्तन उन लाखों आत्माओं को परिवर्तित कर देता है। वे ही इस कल्पवृक्ष के मास्टर बीज भी हैं। उनका परिवर्तन विश्व की अनेक आत्माओं पर प्रभाव डालता है। इस तरह यह कार्य चलता है। देखिए..एक घर में जो परिवार का बड़ा होता है, उसकी स्थिति का प्रभाव सब पर पड़ता है। यदि वह क्रोधी है, कटुभाषी है तो परिवार पर उसका बुरा प्रभाव देखा जा सकता है। इसी तरह जो सृष्टि के बड़े हैं, पूर्वज हैं, उनका प्रभाव भी पूरी सृष्टि पर पड़ता है।

प्रश्न: हमारे सेवाकेन्द्र के मकान को किसी ने बड़ी ही चालाकी से अपनी पत्नी के नाम करा लिया है। हमें इन बातों का इतना ज्ञान नहीं था, उसने हमारे भोलेपन का फायदा उठाया। हम इसमें क्या योग का प्रयोग करें?

उत्तर: अवश्य ही उस व्यक्ति के मन में पाप आ गया है। संसार में पाप अति बढ़ता जा रहा है। अपने ही अपनों को धोखा दे रहे हैं। अब थोड़े ही समय में ऐसे पापी बड़ा कष्ट पायेंगे और जो भगवान को धोखा देने की सोच रहे हैं वे तो स्वयं के लिए रसातल जाने का मार्ग बना रहे हैं। सम्पत्ति आने वाले समय में मनुष्य को ज़्यादा कष्ट देगी। विनाशकाल में सुखी वही रहेंगे जिन्होंने अपनी सम्पत्ति को पुण्यों में बदल दिया होगा। आप डरें नहीं, आप भोले हैं तो भोलानाथ आपके साथ है। भगवान क्योंकि परम सत्य है, इसलिए उसे केवल सत्य ही स्वीकार्य है। आप सच्चे मन से उन्हें क्षमा कर दें और इक्कीस दिन योग करें, एक घण्टा प्रतिदिन। योग से पहले दो स्वमान याद करें - मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ व विघ्न विनाशक हूँ। इससे सेवा में आया यह विघ्न नष्ट हो जाएगा।

Contact e-mail
bksurya8@yahoo.com

गुणातीत ज्ञानी पुरुष अर्थात् साक्षीदृष्टा

- गतांक से आगे...

सतोगुण की अभिव्यक्ति कैसी होती है? सतोगुण की अभिव्यक्ति को तभी अनुभव किया जाता है जब आत्मा तथा सर्व कर्मेन्द्रियों में ज्ञान का प्रकाश प्रकाशित होने के कारण उसमें ईश्वरीय अनुभूति का प्रवाह होता है। सतोगुणी कर्म से अर्जित फल सात्विक, निर्मल और ज्ञान-युक्त होता है। सत्वगुण की वृद्धि काल में मृत्यु को प्राप्त करने वाला भी श्रेष्ठ गति को प्राप्त होता है।

इसलिए हमें किस प्रकार की प्रकृति को निर्मित करना है और कैसे करना है यह हमारे ऊपर निर्भर है। अर्जुन ने प्रश्न पूछा, हे प्रभु! गुणातीत व्यक्ति के आचरण एवं लक्षण कैसे होते हैं?

भगवान ने कहा कि गुणातीत ज्ञानी पुरुष सतो, रजो, तमो गुणों के प्रभाव में नहीं आते और साक्षी दृष्टा बन जाते हैं। वे समस्त प्रतिक्रियाओं से निश्चल और अविचलित रहते हैं। वे निरंतर आत्म-स्थिति में स्थित रह निंदा, स्तुति, मान, अपमान, सुख-दु:ख में संतुलित मन: स्थिति वाला, समान दृष्टि और भाव वाला धैर्यवान रहकर सर्व के साथ समान व्यवहार करते हैं। ये है गुणातीत माना तीनों गुणों से अतीत, उपराम अवस्था वाले व्यक्ति की विशेषता कि वे कैसे तीनों गुणों के प्रभाव में नहीं आते हैं। ये गुणातीत स्थिति भी ज्ञान और पुरुषार्थ से प्राप्त की जाती है। साक्षी भाव, प्रतिक्रियाओं में निश्छल (जिसके अंदर कोई प्रकार का छल नहीं) और अविचलित होता है। निरंतर आत्म-स्थिति का पुरुषार्थ करते हुए उसको विकसित करता है।

वो किस विधि से गुणातीत बनता है? गुणातीत बनने की विधि भगवान स्पष्ट करते हैं कि जो समस्त परिस्थितियों में अविचलित भाव रख अव्यभिचारी भक्ति योग के द्वारा प्रकृति के गुणों के प्रभाव से

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

परे हो जाते हैं, वह मेरे सानिध्य में आ जाते हैं। मैं ही अविनाशी अमृत, शाश्वत् धर्म, परम सुख और परम आनंद का आश्रय हूँ। जो इस प्रकार परमात्म सानिध्य को अपनाते हैं उसी विधि के आधार से वो गुणातीत स्थिति में जा सकते हैं।

इस तरह से पंद्रहवें अध्याय में पुरुषोत्तम योग बताया कि संसार एक वृक्ष है जिसका मूल ऊपर है और नीचे प्रकृति तथा इसकी शाखाएं हैं। जो इस वृक्ष को मूल सहित विदित कर लेता है, वह ज्ञानी है।

पहले श्लोक से लेकर छठे श्लोक तक संसार वृक्ष एवं परमधाम का वर्णन है।

सातवें श्लोक से लेकर ग्यारहवें श्लोक तक जीवात्मा के संस्कारों के अनुसार उसकी गति बताई है।

बारहवें श्लोक से लेकर पंद्रहवें श्लोक तक परमात्मा की अभिव्यक्ति स्पष्ट की है। पुन: परमात्मा की अभिव्यक्ति का वर्णन आता है। सोलहवें श्लोक से लेकर बीसवें श्लोक तक क्षर-अक्षर और पुरुषोत्तम का ज्ञान दिया गया है।

- क्रमश:

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें
आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

'Peace of Mind' channel

TATA Sky 1065 airtel digital TV 678
videocon d2h 497 Reliance Digital TV 640
FASTWAY GTPL DEN hathway UCN DigiCable SITI

Free to Air
ABS FREE DTH
KU Band with MPEG (DVB-S/S2) Receiver
LNB Freq. - 10600/10600
Tans Freq. - 11911
Polarization - Horizontal
Symbol - 44000
22k - On
Satellite - ABS-2; 75° E

Contact
Brahma Kumaris, 2nd Flr Anand Bhavan, Shantivan, Sirohi, Abu Rd, Raj-307510
+91 9414151111
+91 8104777111
info@pmtv.in
www.pmtv.in

ख्यालों के आईने में...

"आशाएं ऐसी हों जो मंज़िल तक ले जाए,
मंज़िल ऐसी हो जो जीवन जीना सिखा दें..।
जीवन ऐसा हो जो सम्बंधों की कदर करे,
और सम्बंध ऐसे हों जो याद करने को मजबूर कर दें..।
दुनिया के रैन बसेरे में..
पता नहीं कितने दिन रहना है,
जीत लो सबके दिलों को..बस यही जीवन का गहना है..।"

"आनंद किसी से मिलता नहीं है, भीतर से आता है।
सुख सदा बाहर से आता है।
सुख सदा किसी पर निर्भर होता है।
इसलिए सुख के लिए दूसरे का मोहताज होना पड़ता है।
और अगर आपको आनंदित होना है, तो आप अकेले भी हो सकते हैं।
जिसे आनंद मिलता है, उसे दु:ख का उपाय नहीं रह जाता।
सुख का विपरीत दु:ख है।
दया के समानांतर खड़ी है क्रूरता।
आनंद अकेला है।
क्योंकि यह स्वनिर्भर है।
द्वंद्व के बाहर है।"

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें...

कार्यालय- ओमशान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए

सम्पर्क - M - 9414006096, 9414182088,
Email- omshantimedia@bkivv.org,
Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये, आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम से मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

शांतिवन। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में व्हॉट्सएप्प यूज़र्स को 'ओमशान्ति मीडिया' का विशेषांक भेजा गया। इसको 'वंडर बुक ऑफ रिकॉर्ड्स इन्टरनेशनल लंडन' में स्थान मिला है। इस विश्व कीर्तिमान का प्रमाण पत्र राजयोगिनी दादी जानकी को भेंट करते हुए ओमशान्ति मीडिया के संपादक ब्र.कु.गंगाधर तथा डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके।

भरतपुर-राज.। 'स्वच्छ भारत मिशन' के तहत 'क्लीन भरतपुर इन वन डे' कार्यक्रम में ब्र.कु. बबिता व ब्र.कु. संतोष को मोमेंटो और सर्टिफिकेट प्रदान कर सम्मानित करते हुए सांसद बहादुर सिंह कोहली, विधायक विजय बंसल, मेयर शिव सिंह भोंट, कलेक्टर एन.के.गुप्ता, अतिरिक्त कलेक्टर ओ.पी. जैन तथा अन्य।

नवरंगपुर-ओडिशा। श्री दुर्गा चरण सारस्वत,संस्थापक,निलाचल सारस्वत संघ के 106वें जन्मदिवस पर श्री श्री निगमानंद आश्रम की ओर से आध्यात्मिक तथा सामाजिक क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदानों हेतु 'माँ शारदा सम्मान-2017' प्राप्त करते हुए ब्र.कु. नीलम।

कोसीकलाँ-उ.प्र.। अन्तर्राष्ट्रीय सन्त सम्मेलन महाकुम्भ में ब्रह्माकुमारी संस्था के आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए महामंडलेश्वर स्वामी कल्याणानंद गिरी, ब्र.कु ज्योत्सना, ब्र.कु. संतोष व अन्य।

बोंगईगांव-असम। आई.ओ.सी.एल.,बोंगईगांव रिफाइनरी में 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' विषय पर कार्यशाला के पश्चात् समूह चित्र में चीफ जनरल मैनेजर जी.सी. सिकदार, सीनियर एक्ज़ीक्युटिव्स, ब्र.कु. लोनी तथा ब्र.कु. राकेश।

वलिया-उ.प्र.। हिन्दी प्रचारिणी सभा के कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. उमा।

जैविक और यौगिक खेती को बढ़ाने का करें प्रयास

चार दिवसीय किसान सम्मेलन में नेपाल तथा देश के हर प्रांत से पहुंचे नौ हज़ार किसान, केंद्रीय कृषि मंत्री ने किया उद्घाटन

शांतिवन। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री राधामोहन सिंह ने ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग की ओर से आयोजित किसान सम्मेलन का शुभारंभ किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि हमारा देश किसानों की बदौलत खाद्यान उत्पादन में आत्मनिर्भर हुआ है। उन्होंने कहा कि अब रासायनिक खादों के कम उपयोग तथा जैविक और यौगिक खेती को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कृषि संबंधित सपनों को पूरा करने में ब्रह्माकुमारी संस्थान मुख्य भूमिका निभा रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर यह संस्थान अभियान यात्राओं के द्वारा किसानों में जागृति का प्रयास कर रहा है। इससे निश्चित तौर पर किसानों के अच्छे दिन आयेंगे। राजस्थान सरकार तथा यहां के कृषि विभाग ने इस क्षेत्र में अच्छी तरक्की की है। इससे कृषि सहज हो रही है। संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि हमारा देश कृषि प्रधान देश है। किसानों को बुरी आदतों जैसे व्यसन आदि से बचाना है तो उसके लिए आध्यात्मिक शिक्षा अति आवश्यक है। संस्था के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर ने कहा कि किसान जैविक और यौगिक खेती का उपयोग करें, ताकि कम लागत में अच्छी उपज हो। ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. सरला तथा उपाध्यक्ष ब्र.कु. राजू ने कहा कि पिछले कई सालों से ग्राम विकास प्रभाग गोकुल गाँव बनाने की दिशा में कार्य कर रहा है। इसके लिए प्रभाग द्वारा किसान जागरुकता अभियान का आयोजन राष्ट्रीय स्तर पर किया जा रहा है, और उसका सकारात्मक परिणाम सामने आ रहा है। देश में जैविक और यौगिक खेती के प्रति किसानों का रुझान बढ़ रहा है जो कि खुशी की बात है। ब्र.कु. सपना समेत कई लोगों ने भी विचार व्यक्त किये।

तपोवन में हो रही जैविक व यौगिक खेती के अवलोकन के अवसर पर निदेशक ब्र.कु.भरत, कलेक्टर संदेश नायक, एस. पी. ओम प्रकाश चौहान, एस. डी.एम. सुरेश ओला, शांतिवन प्रबंधक ब्र.कु.भूपाल, यू.आई. टी. चेयरमैन सुरेश कोठारी, पालिकाध्यक्ष सुरेश सिंदल समेत अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

कृषि मंत्री राधामोहन सिंह किसानों को सम्बोधित करते हुए। साथ हैं ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. सरला, राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर तथा उपाध्यक्ष ब्र.कु. राजू।

o केंद्रीय किसान मंत्री राधामोहन सिंह शांतिवन में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सौर ऊर्जा प्रकल्प का अवलोकन कर अभिभूत हुए, और इसे देश के लिए बेहतर विकल्प बताया।

o इसके साथ ही तपोवन में हो रही जैविक और यौगिक खेती का भी अवलोकन किया तथा इस प्रयास को सराहा। इसे धरती माँ की बेहतर सेहत के लिए व मनुष्य के सुस्वास्थ्य के लिए बहुत ज़रूरी बताया।

शहर को स्वर्ग का मॉडल बनाएं : शिवानी

o बाह्य स्वच्छता के साथ मन को भी स्वच्छ बनायें o स्वच्छ सात्विक भोजन का ही करें सेवन o मेडिटेशन को जीवनचर्या में करें शामिल

दीप प्रज्वलित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी, सिन्धी समाज के अध्यक्ष रमेश सामधानी, सिटी केबल डायरेक्टर सत्यनारायण जयसवाल, ब्र.कु. हेमलता, ब्र.कु. जयंती तथा अन्य गणमान्य लोग।

उज्जैन-म.प्र। लोग महाकाल दर्शन, परमात्म शक्ति, असीम शान्ति के वायब्रेशन्स लेने की मंसा से उज्जैन आते हैं। यहां इसलिए आते हैं क्योंकि उन्हें शान्ति मिलती है। तब तो यहाँ सभी शान्ति से रहते होंगे? मैं कहीं बाहर गई थी, जहाँ सिर्फ कारपेट ही मिलते हैं, पूरे देश में वहीं से सप्लाई होते हैं। वहाँ हर घर में कारपेट ही मिलते हैं, तो यहाँ हर घर में शान्ति होनी चाहिए। कलयुग में भी यहाँ ऐसा होना चाहिए कि लोग यह कहें कि स्वर्ग का मॉडल देखना हो तो उज्जैन चलें। उक्त विचार जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी ने क्षीरसागर मैदान में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये।

उन्होंने जीवन प्रबंधन के उपाय बताते हुए कहा कि हर व्यक्ति एक दीये के समान है, जो प्यार, सम्मान और विश्वास देता है। देवी-देवता इसीलिए पूजनीय होते हैं क्योंकि वे देने वाले हैं। हम लोगों को प्यार, सुख, सम्मान और शान्ति देना शुरु करेंगे तो अच्छे विचारों का दीप जलेगा। यदि हमारे शुभ विचारों का दीप बुझने लगे तो ज्ञान का घी उसमें तुरंत डालें।

मन को बनाएं स्वच्छता में नंबर वन : उन्होंने कहा कि अगर मन स्वच्छ नहीं तो बाहर स्वच्छ नहीं बन सकता। पहले मन को स्वच्छ बनाना होगा। गुस्सा, नाराज़गी, नफ़रत की भावना, ये ऐसे कचरे हैं जो दिखते नहीं। मन को कंट्रोल कर इनको साफ़ करना पड़ेगा। न दिखने वाले कूड़े को साफ़ करने के लिए रोज़ मेडिटेशन करें, चेक करें कि कौन से विचार चल रहे हैं। इनको दूर करने का संकल्प लें।

किचन से दूर हो सकती किच-किच : किचन, रसोई घर ऐसी पवित्र जगह है जहाँ से पूरे घर में पॉज़ीटिव एनर्जी पहुंचाई जा सकती है। खाना बनाते समय यह विचार करें कि हम सब स्नेह से रहें, मेरा घर स्वर्ग है, बच्चे अच्छी पढ़ाई करें, शरीर निरोगी हो। जैसा अन्न खायेंगे वैसा मन बनेगा। टीवी ऑन करके, अखबार पढ़ते खाना खायेंगे तो वैसे ही विचार हमारे मन में आयेंगे।

घर परिवार में ऐसे आएगी शान्ति : उन्होंने कहा कि गुस्सा हमारा स्वभाव नहीं, बीमारी है। इसे ठीक करना होगा, नहीं तो यह बढ़ता ही जाएगा और हमारा स्वभाव बन जाएगा। हर व्यक्ति का संस्कार और व्यवहार अलग होता है। किसी को डांटने या गलती के लिए बार-बार टोकने से वह नहीं सुधरते। छोटी-छोटी बातों से ही जीवन में तनाव आता है। संस्कार बदलने के लिए राय नहीं दें, प्यार और स्वयं के सुधार से ये बदलते हैं। रोज़ संकल्प करें कि मैं खुद एक शांत आत्मा हूँ।

ये तो सात्विक नगरी है : उन्होंने आश्चर्य ज़ाहिर करते हुए कहा कि उज्जैन एक सात्विक नगरी है, तो यहाँ कोई तामसिक भोजन कैसे खा सकते हैं! जब एक जीव मारा जाता है तो उससे नफरत की वायब्रेशन आती है और जब प्लेट में आता है तो कहते हैं प्रोटीन है। जब किसी का देहान्त हो जाता है तो हमारे घर में भोजन नहीं बनता और किचन में, फ्रिज में किसकी बॉडी रहती है? शमशान के नज़दीक घर नहीं लेते और भोजन तामसिक, कैसे संभव है!

सुबह उठकर रोज़ अपने मन को सकारात्मक विचारों से भरें। इससे मोबाइल की तरह शरीर की बैटरी दिनभर चार्ज रहेगी, नहीं तो दूसरों का फोन मांगकर काम चलाना पड़ेगा।

साथ ही कार्यक्रम के दौरान ब्र.कु. शिवानी ने सभी को पॉज़ीटिव एनर्जी देते हुए गहन राजयोग का अभ्यास कराया।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SRO/9623/18-20, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2018-20, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 3rd Jan 2018
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं आशीर्वाद प्रेस द्वारा मुद्रित।